RNI क्र. 50309/85 डाक पंजीयन क्र. म. प्र./भोपाल/261/2021-23/पृष्ठ संख्या 44/प्रकाशन तिथि 1 दिसम्बर 2021

बाल विज्ञान पत्रिका, दिसम्बर 2021

चकमक

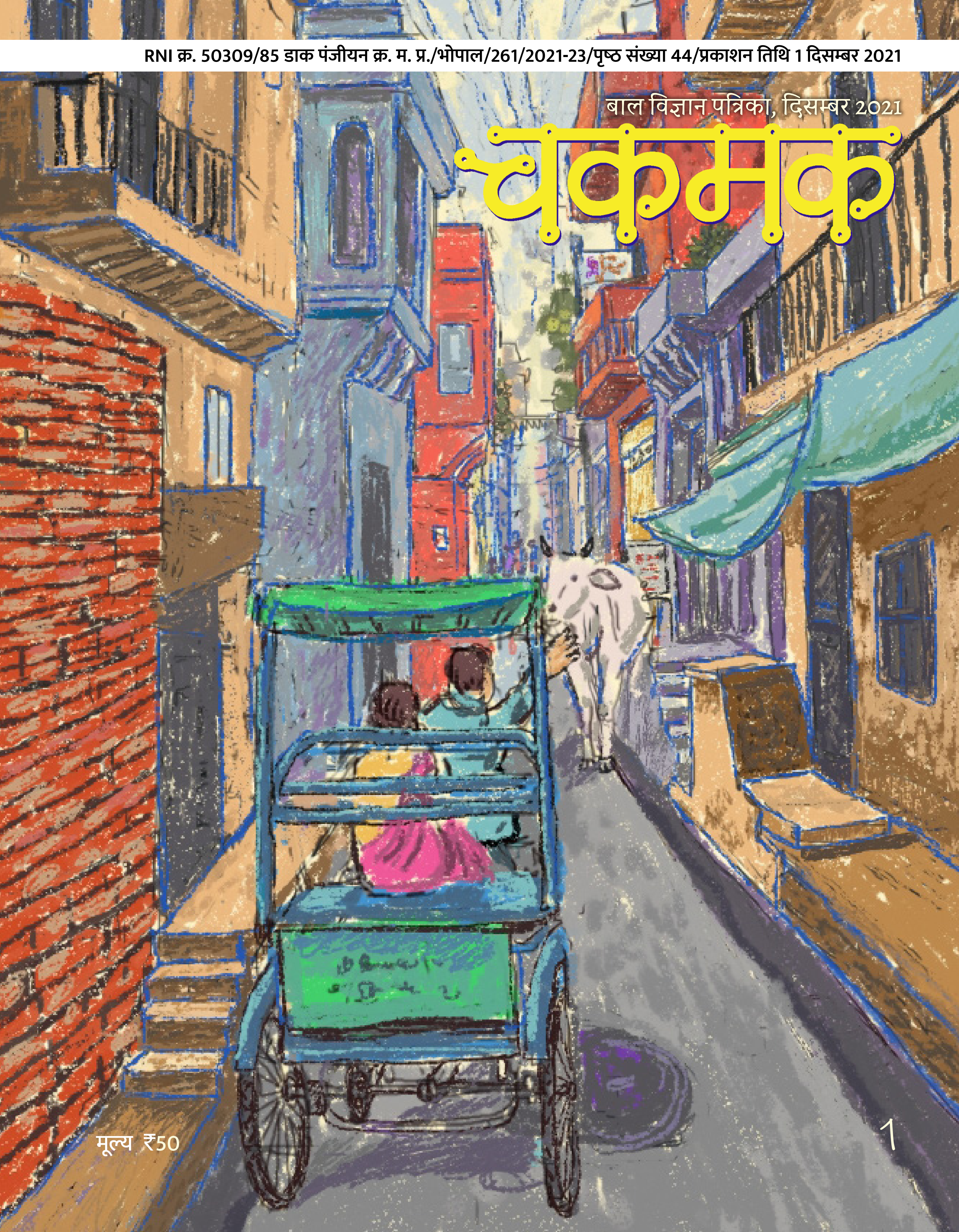

मूल्य ₹50

1

सतरंगी कमला भसीन

सितम्बर 25 को जानी-मानी कवि, गीतकार, नारीवादी और एक्टिविस्ट कमला भसीन चल बसीं। वे *चकमक* की लेखक भी थीं। अपने जीवनकाल में कमला भसीन ने महिलाओं और पुरुषों के समान अधिकारों के लिए काफी जद्दोजहद की थी। हमारे समाज में पुरुषों को अधिक सत्ता दी जाती है और इस कारण महिलाएँ अक्सर चोट खाती हैं। कमला भसीन का कहना था कि जो पुरुष और महिलाएँ इस सत्ता के असन्तुलन को बनाए रखते हैं उनका भी नुकसान होता है – उनकी इन्सानियत कम हो जाती है। वे मानती थीं कि गुस्से से नहीं, बल्कि प्यार से काम करके हम समाज को बदल सकते हैं।

चकमक के साथ कमला जी का गहरा व पुराना रिश्ता था। 'जेंडर' व 'गुड टच, बैड टच' जैसे मुद्दों के लिए *चकमक* में जगह बनाने में कमला जी की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। "काश किसी ने मुझे बताया होता", "मितवा", "जंगल में मंगल – दो बहनों की मसाईमारा यात्रा" आदि उनकी कई रचनाएँ पहले *चकमक* में प्रकाशित हुई हैं। उनकी प्रकाशित रचनाओं की एक झलक तुम्हें *चकमक* के इस अंक में देखने को मिलेगी। उनकी याद में लिखी अरविन्द गुप्ता की श्रद्धांजलि भी तुम इस अंक में पढ़ सकते हो।

खिलाड़ी अम्मा

कमला भसीन

चित्र: मिकी पटेल

खेलकूद में नहीं अनाड़ी
अपनी अम्मा बड़ी खिलाड़ी
बहुत खेल उन्हें आते हैं
बैट-बॉल उन्हें भाते हैं
दौड़ में कैसे फरवट भागे
रस्साकशी में सबसे आगे
पेड़ पे चढ़ने से ना डरतीं
मछली-सी तैराकी करतीं
सितौलिया हो या गुल्ली डण्डा
ऊँचा रहता उनका झण्डा
हम बनें खिलाड़ी ठान लिया है
अम्मा को गुरु मान लिया है

चित्र: चन्द्रमोहन कुलकर्णी

चकमक कविता कार्ड

इन्हें मँगाने के लिए तुम चकमक के पते पर लिख सकते हो। या हमें फोन कर सकते हो। या चाहो तो सीधे ऑनलाइन मँगा लो। http://www.eklavya.in/pitara/chakmak_kavita_cards

अंक 423 • दिसम्बर 2021

चकमक

इस बार

सतरंगी कमला भसीन - 2
अलविदा कमला भसीन - अरविन्द गुप्ता - 4
जब हमारे अपने ही हमें डराएँ - 6
तुम भी बनाओ - अकॉर्डियन किताब - सजिता नायर - 9
नन्हा राजकुमार - एन्त्वॉन द सैंतेक्ज़ूपेरी - 12
विल्लेन!! - रोहन चक्रवर्ती - 15
तालाबन्दी में बचपन - हँसी की खुशी - काजल गोस्वामी - 16
बहाना जो काम कर गया - 20
कीटन की रहस्यमयी बीमारी - तेजी ग्रोवर - 22
क्या सूरज सचमुच... - आलोक मण्डावगणे, वरुणी पी, विजय रविकुमार - 24
आज दलिए को क्या हो गया - उमेश, राम, सुरभि, मोहन - 26
गणित है मज़ेदार - गॉस की कहानी - आलोका कान्हेरे - 30
बातचीत - 32
मेरा पन्ना - 34
माथापच्ची - 38
चित्रपहेली - 40
तुम लड़की हो तुम्हें क्यों पढ़ना हो - कमला भसीन - 44

क्यों-क्यों

जनवरी अंक के क्यों-क्यों का सवाल है—

कहते हैं कि एक मोटे स्वेटर या जैकेट के बजाय कपड़ों की कई परत पहनने से ज़्यादा गर्मी लगती है। ऐसा क्यों?

अपने जवाब तुम हमें लिखकर या चित्र/कॉमिक बनाकर भेज सकते हो।

जवाब तुम हमें chakmak@eklavya.in पर ईमेल कर सकते हो या फिर 9753011077 पर व्हॉट्सऐप भी कर सकते हो। चाहो तो डाक से भी भेज सकते हो।

सम्पादक
विनता विश्वनाथन

सह सम्पादक
कविता तिवारी

सहायक सम्पादक
मुदित श्रीवास्तव

सम्पादन सहयोग
सजिता नायर

वितरण
झनक राम साहू

डिज़ाइन
कनक शशि

डिज़ाइन सहयोग
इशिता देबनाथ बिस्वास

विज्ञान सलाहकार
सुशील जोशी
उमा सुधीर

सलाहकार
सी एन सुब्रह्मण्यम्
शशि सबलोक

एक प्रति : ₹ 50

सदस्यता शुल्क
(रजिस्टर्ड डाक सहित)
वार्षिक : ₹ 800
दो साल : ₹ 1450
तीन साल : ₹ 2250

आवरण चित्र: हरमनप्रीत सिंह

चन्दा (एकलव्य के नाम से बने) मनीऑर्डर/चेक से भेज सकते हैं।
एकलव्य भोपाल के खाते में ऑनलाइन जमा करने के लिए विवरण:
बैंक का नाम व पता - स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, महावीर नगर, भोपाल
खाता नम्बर - 10107770248
IFSC कोड - SBIN0003867
कृपया खाते में राशि डालने के बाद इसकी पूरी जानकारी accounts.pitara@eklavya.in पर ज़रूर दें।

एकलव्य
फोन: +91 755 2977770 से 3 तक; ईमेल: chakmak@eklavya.in, circulation@eklavya.in
वेबसाइट: https://www.eklavya.in/magazine-activity/chakmak-magazine

अलविदा कमला भसीन

अरविन्द गुप्ता

ऐसे बहुत कम लोग होते हैं जो ज़िन्दगी में इतनी अधिक व्यक्तिगत गर्दिशें झेलने के बाद भी हर पल जश्न मनाते हैं और फिर भी समाज को इतना कुछ देकर जाते हैं। कमला इसकी एक जीती-जागती मिसाल थीं। वो लाखों-करोड़ों लोगों के लिए प्रेरणा थीं।

बचपन में ही वो यौन अत्याचार का शिकार बनीं। शायद इसीलिए उन्होंने फिर सारी ज़िन्दगी लड़कियों और औरतों की मुक्ति के लिए काम किया। हमारे देश में लड़कियों और महिलाओं को दूसरे दर्ज़े का इन्सान माना जाता है। बेटी पैदा होने पर कई लोग खुशी नहीं मनाते हैं। कहीं-कहीं तो बेटी को पैदा होने से पहले या फिर पैदा होने के तुरन्त बाद ही मार दिया जाता है। कहते हैं ना, बेटे को मक्खन और बेटी को छाछ। कमला को लगता था कि इस तरह के भेदभाव से सिर्फ लड़कियों और औरतों को ही नहीं, बल्कि पूरे परिवार और समाज को नुकसान होता है।

इसलिए उन्होंने बच्चों के लिए अलग तरह की किताबें लिखीं। अपनी किताबों में उन्होंने महिलाओं को उनका उचित स्थान और सम्मान दिया। *धम्मक-धम* में अम्मा अखबार पढ़ती हैं और अब्बा उनके लिए चाय बनाकर लाते हैं। अम्मा क्रिकेट के बल्ले से छक्का मारती हैं और पापा रोटी बेलते हैं – मोटी और टेढ़ी-मेढ़ी। घर का काम केवल औरतों का नहीं होता, बल्कि सबका होता है। अगर लड़के और मर्द खाना खाते हैं, तो उन्हें खाना बनाना भी सीखना चाहिए। उन्हें भी कपड़े धोने चाहिए।

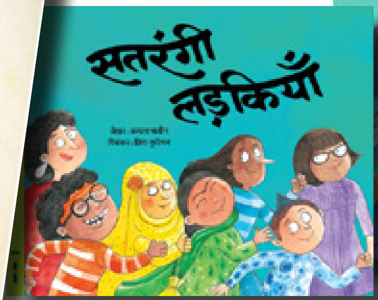

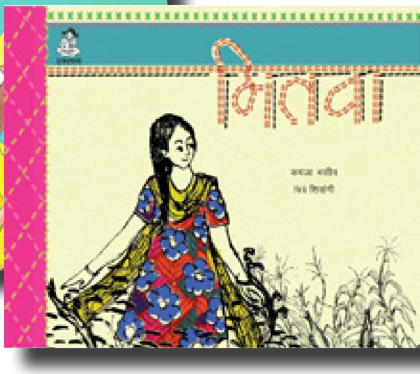

लड़का क्या है? लड़की क्या है? किताब में उन्होंने औरत-मर्द के बीच असमानता के सवाल को बड़े खूबसूरत और सटीक तरीके से उठाया। कमला चाहती थीं कि हमारी बेटियों की ज़िन्दगी में भेदभाव और गैर-बराबरी खतम हो। सबसे अच्छी बात यह है कि आप कमला की सभी किताबें मुफ्त में ऑनलाइन पढ़ सकते हैं। उन्होंने अपनी सभी किताबों को मुफ्त में बाँटने और अनुवाद करने की लोगों को खुली छूट दी। शायद इसी वजह से जन-जन तक उनकी किताबें पहुँचीं।

युद्ध से उन्हें नफरत थी। इसलिए उन्होंने सारी ज़िन्दगी शान्ति और अमन के लिए काम किया। भारत-पाकिस्तान के लोगों के बीच दोस्ती कायम करने में उन्होंने ज़ोर-शोर से हिस्सा लिया। संयुक्त राष्ट्र संघ में खाद्य एवं कृषि संगठन के लिए काम करते हुए दक्षिण-पूर्व एशिया के तमाम देशों में उन्होंने महिला और स्वयंसेवी संगठनों के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर काम किया।

कमला की बहिन बीना काक ने उनकी चिता को आग दी। और उनके तमाम दोस्तों ने कमला के लिखे गीतों को गाकर उन्हें अन्तिम विदाई दी।

भैया

ता ता थैया
सुन मेरे भैया
यूँ मत चीखो
काम काज सीखो
खाते हो जो खाना
सीखो उसे पकाना
अगर फाड़ते कपड़े
सीखो उनको सीना

भरना सीखो पानी
अगर तुम्हें है पीना
अपना काम करे जो खुद
बस उसका ही है जीना
ता ता थैया
सुन मेरे भैया

धम्मक धम

धम्मक धम भई धम्मक धम
छोटे छोटे बच्चे हम
लड़की,न लड़के से कम
धम्मक धम भई धम्मक धम

कमला भसीन
चित्र: मिकी पटेल

यूनिसेफ से प्रकाशित किताब *धम्मक धम बच्चों के गीत* से दो कविताएँ साभार

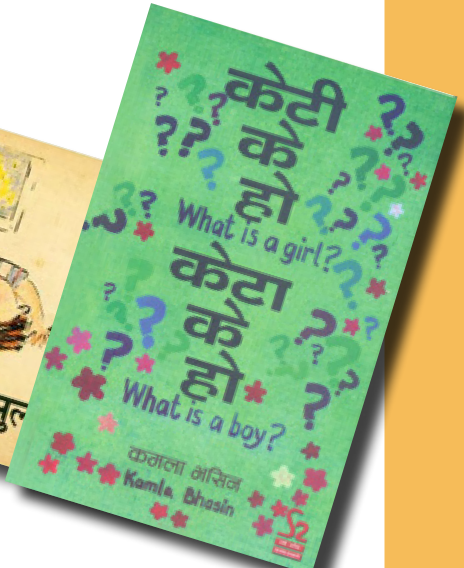

जब हमारे अपने ही हमें डराएँ...

बचपन में हम सब को बड़ों ने कभी ना कभी डराया है। डराने के तरीके और कारण अलग-अलग हो सकते हैं लेकिन मोटे तौर पर हमें डराने का कारण होता है कि हम बस उनका कहा मान लें। नवम्बर अंक के लिए हमने तुमसे ऐसी ही कुछ बातें लिख भेजने को कहा था। बड़ी संख्या में बच्चों से इसके लिए जवाब मिले। कुछ जवाब तुमने नवम्बर अंक में पढ़े। कुछ तुम इन पन्नों में पढ़ सकते हो...

जब मैं छोटा था तब एक दिन मैं अपने बड़े भाई के साथ बाहर गार्डन में खेल रहा था। शाम हो गई और कुछ चमगादड़ आसमान में उड़ रहे थे। मेरे भैया ने मुझे चिढ़ाने के लिए मुझे कहा कि चमगादड़ नीचे आकर कान पकड़ लेता है और कान को खा लेता है। मैं आठ साल का था तो मुझे लगा यह सच है और मैंने अपने कान बचाने के लिए उनको हाथों से पकड़ लिया। यह बात मैं तब तक सच मानता रहा जब तक मैं ग्यारह साल का हुआ। मुझे तब सच पता लगा जब मेरे भाई ने मुझे बताया कि ऐसा नहीं होता और वो ज़ोर-ज़ोर से हँसने लगा क्योंकि मुझे लगता था कि यह सच है। उसने यह मेरे दोस्तों को भी चिढ़ाने के लिए इस्तेमाल किया और उन्होंने भी इसको सच मान लिया।

नील चड्ढा, आठवीं, डीपीएस इंटरनेशनल स्कूल, गुरुग्राम, हरयाणा

गेंहूँ काटने और महुआ बीनने के लिए हम परी के साथ खेत जाते हैं तो शिवम भैया बोलते हैं कि तुम बार-बार खेत मत जाना। भूत खा जाएगा।

पल्लवी सरमाम, चौथी, चिरमाटेकरी, शाहपुर, मध्य प्रदेश

जब मैं छोटा था तो मेरे मम्मी-पापा मुझे एक चीज़ से डराते थे। वो एक सफेद रंग के फूल जैसा होता था जो उड़ता रहता था। मुझे उससे बहुत डर लगता था। तो उसी से मुझे डराते थे।

अरमान, दसवीं, दीपालया लर्निंग सेंटर, संजय कॉलोनी, दिल्ली

चित्र: शीतल, आठवीं, अज़ीम प्रेमजी स्कूल, मातली, उत्तराखण्ड

जब मैं छोटी थी तब मुझे डराने के लिए मम्मी कहती थीं, "रुक मैं अभी सायरन बजा रही हूँ।" और जब कभी मैं बाज़ार से कोई चीज़ लेने की ज़िद करती थी तो मम्मी कहतीं, "रुक मैं तुझे अभी पानी में डालती हूँ।" और कहती थीं, "रुक मैं अभी बिच्छू घास (कण्डाली) लाती हूँ।"

रिशिका बिष्ठ, पाँचवीं, अज़ीम प्रेमजी स्कूल, मातली, उत्तराखण्ड

जब मैं छोटी थी तो सबसे ज़्यादा मैं इंजेक्शन से डरती थी। मैं अगर किसी चीज़ के लिए बहुत ज़्यादा ज़िद करती थी जो इतनी ज़रूरी नहीं होती थी तो पापा-मम्मी मुझे इंजेक्शन का नाम लेकर डराते थे। मैं इंजेक्शन को इंजी कहती थी और जब भी कोई उसका नाम लेता तो रोने लगती थी। मुझे रूई से भी बहुत डर लगता था। जब भी खाने के लिए मैं आनाकानी करती तब मेरी मम्मी मेरे सामने रूई रख देती थीं। उसे देखकर मैं तुरन्त खाने लगती थी।

प्रज्ञा शाह, सातवीं, सरदार पटेल विद्यालय, दिल्ली

पहले में मैं भूत से बहुत डरती थी। जब मैं बाहर जाने की ज़िद करती तो मम्मी कहतीं कि बाहर भूत है जो बच्चों को खा जाता है। इसी डर से मैं बाहर जाने की ज़िद छोड़ देती थी। लेकिन ये भूत वाला डर तो सिर्फ रात में ही काम आता था। दिन में तो किसी झोली वाले बाबा का डर दिखाकर बाहर जाने या खेलने से रोका जाता था। एक बार तो मैं रात को बाहर खेलने की ज़िद करने लगी तो मेरे पापा ने सफेद चादर ओढ़कर भूत बनकर डराया, जो कि सच में बहुत डरावना था।

सान्या, आठवीं, विश्वास विद्यालय, गुरुग्राम, हरयाणा

छोटे में सब मुझे डरावनी कहानियाँ सुनाकर, अलग-अलग आवाज़ें निकालकर डराते थे। एक बार मैं अकेली बैठी टीवी देख रही थी। मैं टीवी देखने में बहुत बिज़ी हो गई थी। तभी अचानक मेरे भैया, पापा और चाचा ने खिड़की खड़काई और डरावनी आवाज़ निकाली। मैं बहुत डर गई। मैंने टीवी की आवाज़ म्यूट कर दी। फिर सुना तो वो आवाज़ बन्द हो गई। मैंने आवाज़ बढ़ाई तो फिर से वो आवाज़ आने लगी। मैंने फिर से टीवी म्यूट किया पर इस बार वो आवाज़ बन्द नहीं हुई। मैं बहुत घबरा गई और तुरन्त कमरे से बाहर मम्मी के पास गई। तब मैं रो रही थी। जब उन तीनों को ये पता चला तो उन्होंने खेल बन्द कर दिया और हँसते-हँसते अन्दर आ गए। तभी मैं भी हँसने लगी।

संचिता गांधी, दसवीं, प्रगत शिक्षण संस्थान, फलटण, सतारा, महाराष्ट्र

चित्र: मायेशा, तीसरी, शिव नाडर स्कूल, नोएडा, उत्तर प्रदेश

बहुत पहले जब मैं छोटी बच्ची थी मेरे माता-पिता ने मुझे रोने से रोकने के लिए एक चाल का इस्तेमाल किया। उन्होंने मुझे कहा कि अगर मैं कभी रोऊँगी तो मैं कभी परियों को नहीं देखूँगी। और मेरे सिर के सारे बाल ज़मीन पर गिर जाएँगे। मैं केवल सात साल की थी जब उन्होंने यह बात मुझे बताई। मैं बहुत डर गई और लगभग दस साल तक की उम्र तक रोई नहीं। यह मेरी कहानी है। क्या आपके साथ भी कभी ऐसा कुछ हुआ है?

रितिशा शर्मा, सातवीं, डीपीएस इंटरनेशनल स्कूल, गुरुग्राम, हरयाणा

मैं जब छोटा था और अपनी नानी के घर घूमने जाता था तो मैं उधर सोता नहीं था। तब मेरी माँ और नानी मुझे डाकू मंगल सिंह बोलकर डराते थे ताकि मैं सो जाऊँ और मैं अपना खाना जल्दी से खतम कर लूँ। यह होता था जब मैं 5-6 साल का था। और इसीलिए मैं अपनी नानी के घर जाने से डरता था। फिर एक दिन जब हम घर बदल रहे थे तो मैं अपनी नानी के घर 1-2 हफ्तों के लिए रुका था । तब मेरे नानू और नानी ने मुझे बताया कि डाकू मंगल सिंह एक कार्टून का पात्र है। फिर मैं 4 दिन तक सोया नहीं था।

सायांश वलेचा, आठवीं, डीपीएस इंटरनेशनल स्कूल, गुरुग्राम, हरयाणा

जब हम छोटे थे तो हमारी बड़ी बहन कहती थी कि दिन में सो जाओ। लेकिन हम नहीं सोते थे तो हमारी बहन कहती थी कि हमारे घर के आसपास दो दाँत वाली एक डायन रहती है। और उसके साथ एक गिडे वाली भी रहती है। जो बच्चे दिन में नहीं सोते उन्हें वो अपने साथ उठा ले जाती है। हमें नींद तो नहीं आती थी लेकिन हम चुप रहते थे और आँखें बन्द करके बेड पर लेट जाते थे।

शीतल, आठवीं, अज़ीम प्रेमजी स्कूल, मातली, उत्तराखण्ड

तुम भी बनाओ

अकॉर्डियन किताब

सजिता नायर

जुगाड़:
अलग-अलग साइज़ के कागज़, फेविकॉल, कैंची, पेंसिल, रबर, गत्ता, पुरानी मैगज़ीन के कवर, स्केल

किताबें पढ़ना मुझे हमेशा से पसन्द रहा है। पढ़ते वक्त मैं कई बार सोचा करती थी कि ये किताब और नोटबुक कैसे बनती होंगी? सारे पन्नों को एक साथ बराबर साइज़ में लगाकर एक किताब या नोटबुक बनाना भी अपने आप में एक कला है। दो साल पहले मुझे एक वर्कशॉप में यह कला सीखने का मौका मिला। ऑफिस के मेरे कुछ साथियों के साथ मैंने एक नहीं, बल्कि तीन-चार तरह की किताबें इस वर्कशॉप में बनानी सीखीं। उनमें से सबसे आसान और मज़ेदार मुझे अकॉर्डियन किताब लगी।

यह किताब दिखने में जितनी दिलचस्प लगती है इसे बनाना भी उतना ही आसान है। तुमने जापानी पंखा तो कई बार बनाया होगा? अगर नहीं बनाया तो कोई बात नहीं अब तुम वो भी बनाना सीख जाओगे। इसके लिए जितने अलग-अलग साइज़ के कागज़ हों, उतना बेहतर। क्योंकि इससे तुम सिर्फ छोटे या बड़े साइज़ के साथ ही नहीं, बल्कि अलग-अलग आकृतियों के साथ भी प्रयोग कर सकते हो।

1. कागज़ को आगे-पीछे करके बराबरी में मोड़ो। कुछ इस तरह से कि जब तुम मुड़े हुए कागज़ को मेज़ पर रखो तो ऐसा लगे जैसे कागज़ के बने पहाड़ हों। यही तुम्हारी अकॉर्डियन किताब है।

2. किताब पूरी तरह मोड़ हो जाने पर एक बार ध्यान-से देखो कि कहीं पन्ने छोटे-बड़े तो नहीं हैं। अगर पन्ने बराबर ना हों तो उन्हें कैंची से बराबर काट लो।

3. किताब के कवर के लिए तुम गत्ता या किसी पुरानी मैगज़ीन का कवर या मोटी ड्राइंग शीट ले सकते हो। जो भी लो बस यह ध्यान रखना कि वो तुम्हारी किताब के कागज़ से थोड़ा मोटा हो।

4. चाहो तो तुम दोनों कवरे किताब के साइज़ से थोड़ा बड़ा काट सकते हो या बराबर भी काट सकते हो।

5. गत्ते को तुम अपने घर पर पड़े पुराने कपड़े या सूखे फूल-पत्ती या गिफ्ट रेपर से सजा सकते हो। बस तुम्हारी किताब तैयार है।

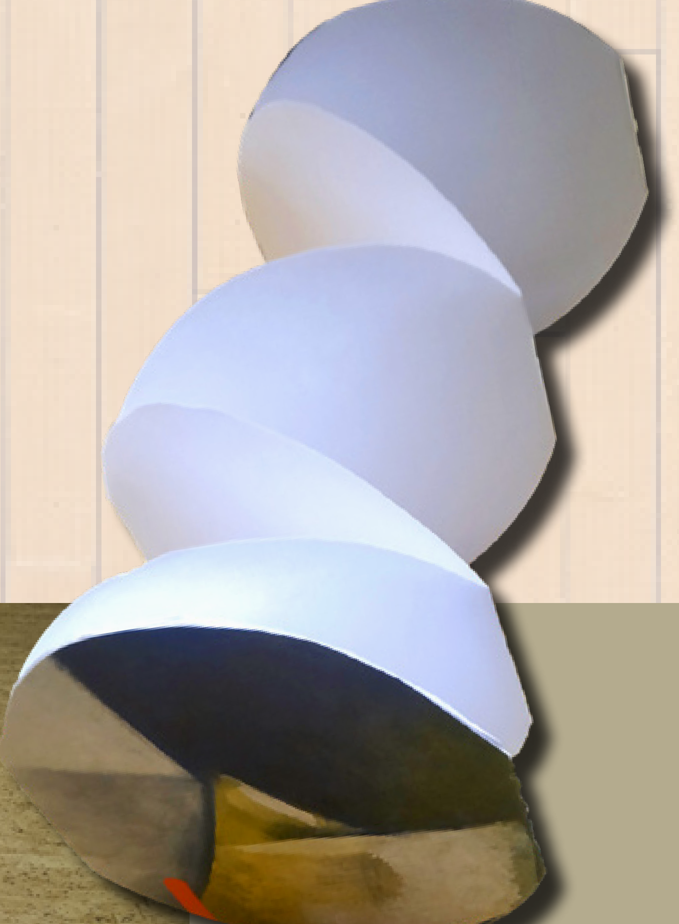

मैंने अलग-अलग आकृतियों की अकॉर्डियन किताबें बनाने की कोशिश की। तुम भी ऐसा करके देख सकते हो। बस ध्यान रखना कि जो भी आकृति तुम चाहो उसमें दोनों तरफ के मोड़ बने रहें। अब इसे तुम अपनी डायरी बना सकते हो या अपनी कहानी की किताब या फिर फोटो एल्बम। तुम्हारी बनाई अकॉर्डियन किताब देखने का मुझे इन्तज़ार रहेगा।

मज़े की बात

'अकॉर्डियन' शब्द असल में एक संगीत यंत्र का नाम है। इन किताबों को अकॉर्डियन नाम देने का कारण यही है की यह दिखने में इस बाजे की तरह ही दिखती हैं। इतिहासकारों की मानें तो इस तरह की किताब बनाने की शुरुआत हज़ार सालों से भी पहले चीन के तांग राजवंश (618-908 ईस्वी) से हुई। और कुछ ही वर्षों में जापान में यह किताब के रूप में उभरी। लेकिन जापान के साथ-साथ कई और अन्य एशियाई देशों में इसका उपयोग हुआ। इस किताब को जापानी भाषा में *ओरिहोन* कहा जाता है। बारहवीं शताब्दी की शुरुआत में एक किताब जो ओरिहोन फॉर्मेट में बनाई गई और बहुत मशहूर हुई वो थी *द टेल ऑफ गेंजी*, जो कि मुरासाकी शिकीबू द्वारा लिखी गई जापानी साहित्य की जानी-मानी किताब है।

अकॉर्डियन बाजा

रेशम के कपड़े पर बनाई हुई चीनी अकॉर्डियन किताब

द टेल ऑफ गेंजी — मुरासाकी शिकीबू

भाग – 5

नन्हा राजकुमार

एन्त्वॉन द सैंतेक्ज़ूपेरी
अनुवाद : लालबहादुर वर्मा

अब तक तुमने पढ़ा...
लेखक को बचपन में बड़ों ने चित्र बनाने से हतोत्साहित किया तो वह पायलट बन बैठा। अपनी एक यात्रा के दौरान उसे रेगिस्तान में जहाज़ उतारना पड़ा। वहाँ उसकी भेंट एक नन्हे राजकुमार से हुई, जो किसी दूसरे ग्रह का निवासी है। राजकुमार ने लेखक को अपने ग्रह के बारे में बहुत-सी विचित्र बातें बताईं। उसने लेखक को अपने प्रिय फूल के बारे में विस्तार से बताया।
अब आगे...

आकाश से विचरता उसने अपने को 325, 326, 327, 328, 329 और 330 नामक ग्रहों के करीब पाया। उसने कुछ करने, कुछ सीखने के लिए उन ग्रहों में जाने का निश्चय किया। पहले ग्रह में एक राजा रहता था। फर के गुलाबी और सफेद राजसी वस्त्रों से सुसज्जित वह एक सादे लेकिन शानदार सिंहासन पर बैठा था।

"वाह! यह रही मेरी प्रजा।" नन्हे राजकुमार को देखते ही वह चिल्लाया।

राजकुमार ने सोचा, "इसने मुझे पहले तो कभी देखा नहीं फिर कैसे पहचान लिया मुझे।"

वह नहीं जानता था कि राजाओं के लिए दुनिया बड़ी सरल होती है। उनके लिए अपने अलावा सब लोग प्रजा होते हैं।

उस एकाकी राजा ने, जो अब किसी के लिए राजा था, गर्व से कहा, "नज़दीक आ ताकि तुझे देख सकूँ।"

राजकुमार ने चारों ओर देखा कि कहाँ बैठे, पर उस छोटे-से ग्रह पर कहीं जगह नहीं थी। हर तरफ राजा के राजसी वस्त्र फैले हुए थे। वह खड़ा ही रहा और चूँकि थक गया था इसलिए उसे जम्हाई आ गई।

"राजा के सामने जम्हाई लेना सभ्यता के विरुद्ध है। ऐसा मत करना अब।" राजा बोला।

राजकुमार की समझ में नहीं आया। वह बोला, "कैसे रोकूँ! बहुत दूर की यात्रा करके आ रहा हूँ और मैं बिलकुल सो नहीं सका हूँ।"

"अच्छा तुझे जम्हाई लेने की आज्ञा है। सालों गुज़र गए किसी को जम्हाई लेते देखे। मेरे लिए यह देखना अजीब-सी बात है। अच्छा! तो ले जम्हाई! मैं आज्ञा देता हूँ।"

राजकुमार लाल हो गया। बोला, "अब तो डर लगता है... अब नहीं आती जम्हाई।"

"हूँ! हूँ अच्छा तो मैं... तुझे आज्ञा देता हूँ कि अभी जम्हाई ले। अभी... ... ..."

उसे शब्द नहीं मिले। वह परेशान दिखाई पड़ा।

राजा होने के नाते वह चाहता था कि उसकी सत्ता का सम्मान हो। उसे अपनी आज्ञा का उल्लंघन बर्दाश्त नहीं था। वह एकछत्र राजा था लेकिन चूँकि एक नेक आदमी था वह तर्कसंगत आज्ञा ही देता था।

वह कहता, "अगर मैं एक सेनापति से कहूँ कि वह बगुला बन जाए और वह मेरी आज्ञा ना माने तो इसमें मेरा दोष है, उसका नहीं।"

धीरे-से राजकुमार ने पूछा, "मैं बैठ जाऊँ?"

अपने वस्त्रों को सिकोड़कर राजा बोला, "मैं तुझे बैठने की आज्ञा देता हूँ।" राजकुमार अचम्भे में था। इतने नन्हे-से ग्रह पर वह राजा आखिर राज्य किस पर करता होगा।

"महाराज! क्षमा कीजिएगा। आपसे एक प्रश्न पूछूँ?"

"मैं तुझे प्रश्न पूछने की आज्ञा देता हूँ।"

"आप किस पर राज्य करते हैं?"

"सब पर।" राजा ने सादगी से उत्तर दिया।

"सब पर?"

राजा ने चारों तरफ हाथ घुमाकर ग्रहों और सितारों की ओर इशारा कर दिया।

"इन सब पर?" नन्हे राजकुमार ने पूछा।

"इन सब पर।"

वह एकछत्र ही नहीं, सार्वभौम राजा था।

"सितारे आपकी आज्ञा मानते हैं?"

"हाँ! हाँ!" राजा बोला। "वे तुरन्त मेरी आज्ञा का पालन करते हैं। मुझे अनुशासनहीनता पसन्द नहीं।"

नन्हा राजकुमार ऐसी सत्ता के सामने हतप्रभ था। अगर वह स्वयं इतना शक्तिशाली होता तो उसने केवल चवालीस बार नहीं बल्कि बहत्तर, सौ या दो सौ बार सूर्यास्त देखा होता एक ही दिन में बिना अपनी कुर्सी एक बार भी खिसकाए। और चूँकि अपना घर

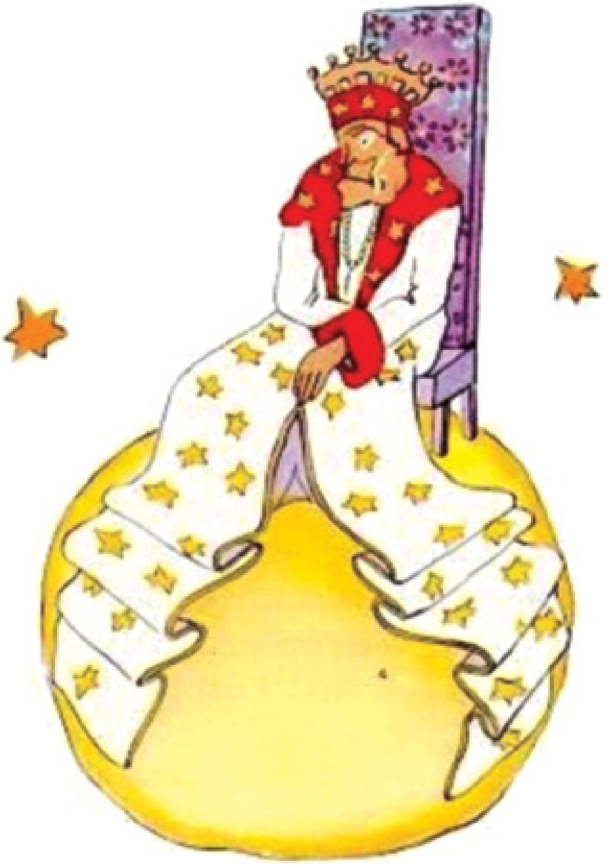

छोड़ने की वजह से वह उदास था उसने हिम्मत करके राजा से उस पर कृपा करने की माँग की, "मैं सूर्यास्त देखना चाहता हूँ... ...मेरी खुशी के लिए... सूरज को आज्ञा दीजिए कि वह अस्त हो जाए..."

"अगर मैं एक सेनापति को आज्ञा दूँ कि वह तितली की तरह एक फूल से दूसरे फूल पर उड़ता फिरे, कि वह एक नाटक लिखे या कि वह एक बगुला बन जाए – और यदि वह मेरी आज्ञा का पालन ना करे तो गलती उसकी होगी या मेरी।

"आपकी," दृढ़तापूर्वक उससे जवाब दिया।

"बिलकुल ठीक!", राजा ने कहा, "हर किसी से उसी बात की अपेक्षा रखनी चाहिए जिसके वह लायक हो। सत्ता का आधार न्यायसंगत होना चाहिए। यदि कोई राजा अपनी प्रजा से डूब मरने के लिए कहे तो वह क्रान्ति कर देगी। मुझे अपनी आज्ञा का पालन

राजा होने के नाते वह चाहता था कि उसकी सत्ता का सम्मान हो। उसे अपनी आज्ञा का उल्लंघन बर्दाश्त नहीं था। वह एकछत्र राजा था लेकिन चूँकि एक नेक आदमी था वह तर्कसंगत आज्ञा ही देता था।

वह कहता, "अगर मैं एक सेनापति से कहूँ कि वह बगुला बन जाए और वह मेरी आज्ञा ना माने तो इसमें मेरा दोष है उसका नहीं।"

धीरे-से राजकुमार ने पूछा, "मैं बैठ जाऊँ?"

अपने वस्त्रों को सिकोड़कर राजा बोला, "मैं तुझे बैठने की आज्ञा देता हूँ।"

राजकुमार अचम्भे में था। इतने नन्हे-से ग्रह पर वह राजा आखिर राज्य किस पर करता होगा।

कराने का अधिकार है क्योंकि मेरी आज्ञा न्यायसंगत होती है।"

"और मेरे सूर्यास्त का क्या हुआ?" राजकुमार ने याद दिलाया। वह एक बार प्रश्न करने के बाद उसे कभी नहीं भूलता था।

"तेरा सूर्यास्त, मिलेगा तुझे। मैं चाहूँगा कि सूर्यास्त हो लेकिन... लेकिन पहले देखना पड़ेगा कि परिस्थितियाँ अनुकूल हैं या नहीं। यही प्रशासन का तरीका है।"

"ऐसा कब होगा?" राजकुमार ने जानना चाहा।

"हूँऽऽ! एक बड़ा-सा कैलेण्डर देखता हुआ राजा बोला। हूँऽऽ... सूर्यास्त करीब... करीब सात बजकर चालीस मिनट पर होगा। और तब देखना कैसे मेरी आज्ञा का पालन होता है।"

राजकुमार को जम्हाई आ गई। उसे अफसोस हो रहा था कि वह सूर्यास्त नहीं देख पाएगा। उसे उलझन होने लगी थी।

"मुझे यहाँ कुछ नहीं लेना-देना। मैं चला।" उसने राजा से कहा।

"नहीं, नहीं जा मत। मैं तुझे मंत्री बना दूँगा।", राजा बोला। "उसे गर्व था कि उसकी कोई प्रजा तो है।"

"किस चीज़ का मंत्री?"

"...न्याय मंत्री।"

"लेकिन किसे दूँगा मैं न्याय? यहाँ कौन है?"

"कौन जाने। मैं बूढ़ा हो गया हूँ। चलने-फिरने से थक जाता हूँ। मैंने अपना राज्य घूमकर देखा भी तो नहीं है।"

"अच्छा? लेकिन मैंने देखा है।" उस छोटे-से ग्रह के दूसरी ओर झाँकता हुआ राजकुमार बोला, "वहाँ भी तो कोई नहीं है।"

"अच्छा स्वयं अपने को न्याय देना। वही सबसे मुश्किल है। अपने प्रति न्याय करना दूसरे को न्याय देने से अधिक कठिन होता है। तू अपने साथ न्याय कर सका तो तू सही अर्थों में एक बुद्धिमान और पहुँचा हुआ व्यक्ति कहलाएगा।"

"अगर मुझे अपने ही साथ न्याय करना है तो मैं कहीं भी कर सकता हूँ। मुझे यहाँ रहने की क्या ज़रूरत है।"

"हूँ! मुझे विश्वास है कि इस ग्रह पर कहीं एक चूहा भी है। रात को मैं उसकी आवाज़ सुनता हूँ। तू उस बूढ़े चूहे को न्याय देना। कभी-कभी उसे मृत्युदण्ड दे दिया करना। इस प्रकार उसका जीवन तेरे न्याय पर आश्रित हो जाएगा। लेकिन उसे माफ भी करते रहना पड़ेगा क्योंकि एक वही तो है। वह भी मर गया तो क्या होगा!"

"मैं... मुझे मृत्युदण्ड देना पसन्द नहीं। और फिर... मैं... मैं तो जा रहा हूँ।"

"नहीं... नहीं।"

लेकिन राजकुमार ने, जो जाने के लिए तत्पर था, राजा को और दुखी करना नहीं चाहा। उसने कहा, “अगर महामहिम को तुरन्त अपनी आज्ञा के पालन का सुख लेना हो तो मुझे एक तर्कसंगत आज्ञा दें। जैसे आप मुझे आज्ञा दे सकते हैं कि मैं एक मिनट के अन्दर यहाँ से चला जाऊँ और मुझे लगता है कि इस आज्ञा के लिए परिस्थितियाँ अनुकूल हैं।”

राजा ने जवाब नहीं दिया था। इसलिए उसे थोड़ा संकोच हुआ फिर एक लम्बी साँस लेकर वह रवाना हो गया।

“मैं तुझे अपना राजदूत बनाता हूँ।” जल्दी-से चिल्लाया राजा। उसके चेहरे पर अधिकारपूर्ण भंगिमा का तनाव दिखाई पड़ रहा था। चलते-चलते नन्हे राजकुमार ने सोचा, “ये बड़े-बूढ़े लोग अजीब होते हैं।”

अगले अंक में जारी...

विल्लेन!!

रोहन चक्रवर्ती

हँसी की खुशी

काजल गोस्वामी

चित्र: हरमनप्रीत सिंह

"जब तुम्हारी क्लास खतम हो चुकी है तो इतनी देर से फोन क्यों चला रही हो?" मम्मी की डाँट से वह परेशान हो गई और मम्मी पर भड़क उठी, "क्या है आपको। मुझे अच्छा लगता है और कभी आपने अपने से दिया है फोन मुझे! अब देखने दो!"

तालाबन्दी में बचपन

इस बार के लॉकडाउन को लगे बीस दिन बीत चुके हैं। खिचड़ीपुर के मंगल बाज़ार, टी-कैम्प में लोगों की हलचल अब भी दिखाई दे रही है। टी-कैम्प की गलियाँ इतनी सँकरी है कि दो लोग एक साथ नहीं निकल सकते। अगर किसी दिन गली में कोई गाय आ जाए तो ट्रैफिक जाम जैसा समां रहता है। यहाँ के घर एक-दूसरे से इस कदर चिपके हुए हैं, मानो इन्हें गोंद से चिपका दिया गया हो। घर बेशक एक कतार में हों, लेकिन छतें ऐसी ऊँची-नीची हैं कि कोई छत पर नहीं जा सकता। चादरों से बनी छतें घरों को धूप और बारिश से बचाती भर हैं।

इसी टी-कैम्प की तीसरी गली में काजल का घर है। वह दसवीं कक्षा में पढ़ती है। आलसी है। उसे खाली बैठना ज़्यादा पसन्द है। खाने की शौकीन तो है ही। उसके मन में बस एक ही सवाल रहता है कि लॉकडाउन कब हटेगा। दोपहर के बारह बजने को हैं और मम्मी तकियों के खोल बनाने में व्यस्त हैं। वहीं काजल ज़ूम मीटिंग से क्लास कर यू-ट्यूब पर लाइनर लगाने के तरीके सीख रही है।

काजल की मम्मी का नाम सियावती है। पापा प्यार से उन्हें सिया कहकर बुलाते हैं। वक्त की आपाधापी में सिया ने बहुत-सी परेशानियाँ झेली हैं। बालों की चुटिया जो पहले कमर तक लटकती थी अब कन्धे तक सिमट गई है। काले बालों पर सफेद रंग हावी होने लगा है। उन सफेद बालों को छुपाने के लिए वह महीने में एकाध बार डाई का इस्तेमाल कर लेती है। चेहरे पर शिकन भले ना हो लेकिन सिया के माथे की लकीरें बयाँ करती हैं कि वह अभी भी परेशानियों से जूझ रही है। उसके बावजूद भी सिया पूरे घर को सँभालते हुए दोनों टाइम का खाना बनाती है। वह पूरे दिन हमको हँसाती रहती हैं, भले ही वो होंठों पर लिपस्टिक लगाना भूल जाएँ।

काजल काफी देर से फोन लिए हुए थी। मम्मी उसे तिरछी नज़रों से देखे जा रही थीं कि क्लास खतम होने के बाद भी काजल इतनी देर से क्या चला रही है। काफी देर तक बर्दाश्त करने के बाद उन्होंने काजल को डाँटते हुए कहा, “जब तुम्हारी क्लास खतम हो चुकी है तो इतनी देर से फोन क्यों चला रही हो?” मम्मी की डाँट से वह परेशान हो गई और मम्मी पर भड़क उठी, “क्या है आपको। मुझे अच्छा लगता है और कभी आपने अपने से दिया है फोन मुझे! अब देखने दो!”

ऐसा जवाब सुनकर मम्मी दंग रह गईं। उनका मन भारी हो गया। फोन देखते-देखते जब कुछ समय गुज़र गया तो काजल को एहसास हुआ कि वह कुछ ज़्यादा ही बोल गई है। गलती का एहसास होने के बाद उसके मन में मम्मी को मनाने की तरकीब सूझी।

मम्मी का चेहरा सख्त नज़र आ रहा था। लेकिन उसे यह मालूम था कि मम्मी बेहद कोमल स्वभाव की हैं। काजल को एकाएक खयाल आया कि मम्मी का चेहरा जो ज़्यादातर सादा ही रहता है क्यों ना आज मैं उसे सजाऊँ। तभी काजल मेकअप का डिब्बा उठा लाई और मम्मी के पास बैठकर प्यार से कहने लगी, “मम्मी आओ आज मैं आपको तैयार करती हूँ!”

“क्यों! अभी तक तो बहुत भड़क रही थी। जा यहाँ से।” सिया यह बात सुई को धागे की रोली में लगाते हुए बोली। काजल

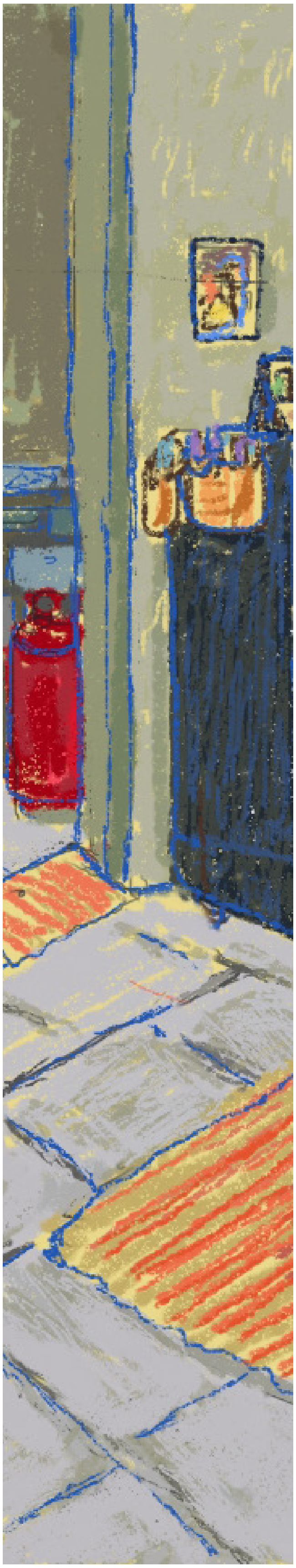

ने कहा, "अरे देखो ना मम्मी! दीदी को तो मेकअप का कोई शौक ही नहीं है। और कोमल से कहूँ तो उसको एक भी गलती नहीं चाहिए होती है। मैंने अभी लाइनर का एक डिज़ाइन सीखा है मुझे एक बार लगाकर देखना है कि इसमें आप कैसी लगेंगी।" काजल ने सॉरी कहते हुए माफी माँग ली। फिर भी काफी जद्दोज़हद के बाद वह मानीं। काजल ने झट-से मेकअप का डिब्बा खोल मम्मी से कहा, "मम्मी, आप एक काम करो। आप गुदरी से हटकर आराम-से नीचे बैठ जाओ ताकि मैं आसानी-से आपको तैयार कर सकूँ।"

मम्मी बिना कोई सवाल किए ज़मीन पर बैठ गईं। मम्मी का चेहरा देखकर ऐसा लग रहा था मानो वो अब भी गुस्से में हैं। लेकिन कहीं ना कहीं मम्मी भी तैयार होना चाह रही थीं।

मेकअप डिब्बे से फाउण्डेशन निकालकर अपनी दो उँगलियों से उसने धीरे-धीरे माथे से शुरू करके पूरे गले तक फाउंडेशन लगा दिया। फिर जल्दी-जल्दी से फेस पाउडर लगाया। काजल ने लाइनर उठाया ही था कि तभी सिया ने काजल से पूछा, "यह कौन-सी चीज़ है? नाखून पालिश तो नहीं है?" काजल ने कहा, "इसे लाइनर कहते हैं।" काजल की मम्मी माथा सिकोड़ते हुए बोलीं, "ना जाने क्या-क्या लगता है चेहरे पर। हमारे ज़माने में तो काजल और लिपस्टिक के अलावा और कुछ भी नहीं था।" यह सुनकर काजल की हँसी छूट गई।

काजल ने लाइनर का ढक्कन खोलकर आँखों की पलकों के ऊपर से अपने हल्के हाथों से एक लकीर झट-से खींच दी। फिर इसी तरह उसने दूसरी आँख में भी लगा दिया। फिर वह मम्मी की मनपसन्द रंग की मैहरून लिपस्टिक उनके होंठों पर धीरे-धीरे लगाने लगी। मम्मी की आँखें बन्द थीं। शायद मम्मी नींद में थीं जिसकी वजह से कोई परेशानी नहीं हुई। काजल मम्मी की आँखों की ओर देखती हुई बोली, "म... मी... च... च... मम्मी हिलो नहीं, वरना सब खराब हो जाएगा।"

"रहने दे काजल, मुझे बहुत तेज़ नींद आ रही है।" इतना कहते ही मम्मी तकिया लेकर वहीं ज़मीन पर लेट गईं। लेकिन काजल अपने काम में लगी ही रही। फिर उसने बिन्दी निकालकर मम्मी के माथे पर लगा दी। सारा सामान मेकअप बॉक्स में समेटकर वह मम्मी को एकटक देखने लगी। ऐसा लग रहा था मानो किसी ने सफेद कागज़ पर रंगों को सजा दिया है।

देखते-देखते ना जाने कब उसे भी नींद आ गई और वो मम्मी के बगल में ही सो गई। एक अनदेखा-सा सपना देख काजल उठी। धुँधली आँखों से जब उसने मम्मी को देखा तो वह हँसने लगी। ऐसा

"रहने दे काजल, मुझे बहुत तेज़ नींद आ रही है।" इतना कहते ही मम्मी तकिया लेकर वहीं ज़मीन पर लेट गईं। लेकिन काजल अपने काम में लगी ही रही। फिर उसने बिन्दी निकालकर मम्मी के माथे पर लगा दी। सारा सामान मेकअप बॉक्स में समेटकर वह मम्मी को एकटक देखने लगी। ऐसा लग रहा था मानो किसी ने सफेद कागज़ पर रंगों को सजा दिया है।

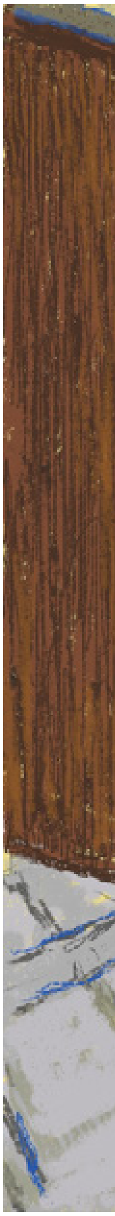

लगा शायद वह अभी भी सपना देख रही है। उँगलियों से आँखों को मलकर देखा तो यह हकीकत थी। मम्मी और दीदी सच में हँस रही थीं। पर इसी हँसी का राज जानने के लिए काजल ने मम्मी से सवाल किया कि आप दोनों इतना हँस क्यों रही हो। तभी मम्मी ने तेज़ी-से कन्धे पर थपकी देते हुए कहा कि आज जो तूने मुझे जोकर-सा बना दिया है ना! इसीलिए मैं हँस रही हूँ।

मम्मी के यह शब्द सुनकर उसे भी हँसी आ गई। इस तरह हमारी सम्मिलित हँसी पूरे घर में गूँजने लगी। माहौल को देख काजल को लगा जैसे मम्मी का गुस्सा ठण्डा होकर पिघल गया है। और अब वह सिर्फ प्यार करनेवाली माँ रह गई हैं।

काजल गोस्वामी, राजकीय सर्वोदय कन्या विद्यालय, कल्याणवास, दिल्ली में बारहवीं कक्षा की छात्रा हैं। वह पिछले पाँच सालों से अंकुर से जुड़ी हैं। उन्हें कहानी लिखना पसन्द है।

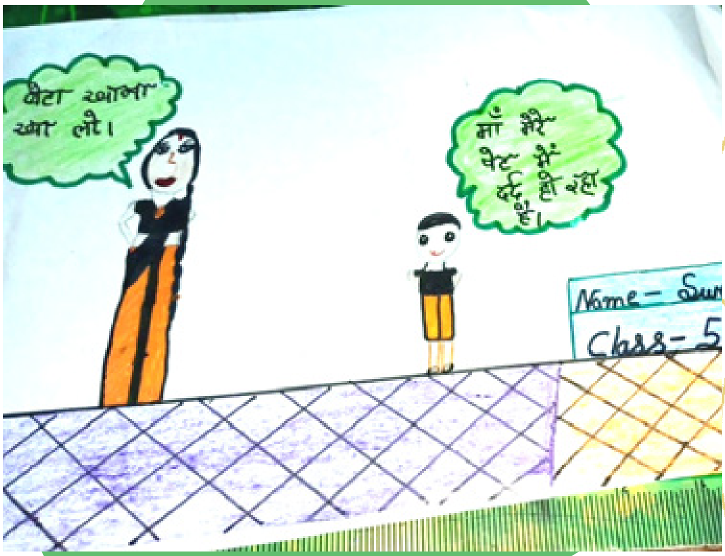

चित्र: श्वेता, पाँचवीं, विश्वास विद्यालय, गुरुग्राम, हरयाणा

पार्क में जाकर अपनी दोस्त के साथ खेलने के लिए एक दिन मैंने बहाना बनाया। मैंने कहा कि मुझे उससे स्कूल का काम करने के लिए कॉपी लाना है। यह कहकर मुझे जाने की परमिशन मिल गई। और मैं खूब खेली। बहुत मज़ा आया।

स्वाति, छठवीं, विश्वास विद्यालय, गुरुग्राम, हरयाणा

बहाना जो काम कर गया

इस अंक के लिए हमने बच्चों से कहा था कि वो उनके द्वारा बनाए गए किसी ऐसे बहाने के बारे में लिखें जो काम कर गया हो।

वैसे बड़े भी बहाने बनाते हैं, लेकिन बचपन में हमें बहाने बनाने की ज़्यादा ज़रूरत पड़ती है। शायद इसलिए क्योंकि बच्चों के विचारों को अक्सर अहमियत नहीं दी जाती है। कहाँ-कैसे बैठना-खड़ा होना है, क्या और कितना खा सकते हैं, कब खेल सकते हैं — हर चीज़ बड़े इनके लिए तय करते हैं। तो जब पता हो कि बड़े बात नहीं मानने वाले बहाना बनाकर बच्चे अपनी मर्ज़ी से कुछ कर लेते हैं।

बच्चों के बहाने अक्सर दूसरों को नुकसान नहीं पहुँचाते हैं। फिर भी पता चलने पर कई बार बड़े गुस्सा करने लगते हैं। हाँ अगर बाल कृष्ण सी किस्मत हो तो खता जो भी हो नटखट समझकर बड़े हँस भी देते हैं।

बच्चों के भेजे दिलचस्प जवाबों से कुछ तुमने नवम्बर के अंक में पढ़े। कुछ तुम इन पन्नों में पढ़ सकते हो।

एक दिन मैंने अपनी बोतल में बहुत गरम पानी डाल दिया और वो पिघल गई। पहले तो मैं बहुत डर गई क्योंकि मुझे लगा अब तो मुझे डाँट खाने से कोई नहीं बचा सकता। फिर मुझे एक बहाना सूझा। मैंने यह किसी को नहीं बताया कि वो बोतल मेरी वजह से पिघल गई। और मुझ पर किसी को शक ना हो इसलिए मैंने उस बोतल को गैस के पास रख दिया। और जैसे ही मम्मी आईं मैंने कहा कि मम्मी पता नहीं, ये बोतल किसने जला दी। शायद ये गैस के पास थी इसलिए जल गई होगी। और मम्मी ने मेरी बात मान ली।

निहारिका, आठवीं, अज़ीम प्रेमजी स्कूल, मातली, उत्तराखण्ड

एक बार मैं ग्वाला गई थी। हम सभी बच्चे खेल रहे थे। मुझे घर जल्दी जाना था। मैं घर जाने को अकेली थी। सब बच्चे खेल रहे थे। मेरे साथ कोई नहीं आ रहा था। मुझे एक बहाना सूझा। मैंने डरते हुए बोला, “बाघ आ गया। भागो जल्दी। वो हमें खा जाएगा।” मेरा ये बहाना काम कर गया।

गुंजन पूरी, सातवीं, राजकीय इंटर कॉलेज, असगोली, द्वाराहाट, अल्मोड़ा, उत्तराखण्ड

ये बहाना लॉकडाउन के समय का है। जब हमारा विद्यालय बन्द था तो एक बार मम्मी ने मुझसे बोला कि हिमांशी तेरी छुट्टियाँ हैं तो तू आज मेरे साथ खेत में चल। मेरे साथ घास ले आएगी। मुझे खेत में जाना बिलकुल भी पसन्द नहीं है तो मैंने एक बहाना बनाया। तब लॉकडाउन के कारण ऑनलाइन पढ़ाई होती थी। सारा काम मोबाइल में आता था तो मैंने मम्मी को बोला कि स्कूल से काम आया है और मुझे करके भेजना है। तो मम्मी ने बोला कि बाद में कर लेना। अभी तू मेरे साथ चल। मुझे किसी भी तरह से खेत में नहीं जाना था। तो मैंने बोला कि मम्मी मुझे अभी भेजना है। नहीं भेजूँगी तो सर डाँटेंगे। तो मम्मी ने कहा कि चल तू काम कर ले। घास मैं ले आऊँगी। थोड़ा गुस्सा तो थीं मम्मी, पर मान गईं। बहाना तो मेरा गलत था पर काम कर गया।

हिमांशी जोशी, ग्यारहवीं, राजकीय इंटर कॉलेज, असगोली, द्वाराहाट, अल्मोड़ा, उत्तराखण्ड

मैं किसी काम से बचने के लिए अपने आप से ‘हाइड एंड सीक’ खेलता हूँ। और इससे मैं मम्मी के सामने नहीं आता हूँ। और मम्मी वो काम भूल जाती हैं।

मानस जादव, आठवीं, उज्जैन, मध्य प्रदेश

एक दिन दोस्तों ने बोला, “चलो घूमने चलते हैं।” मेरे को नहीं जाना था तो मैंने कहा, “नहीं यार। भौरा जाना है कुछ काम से। पापा बोल रहे हैं। बैंक से पैसे निकालने जाना है नहीं तो मैं आ जाता।”

शशांक सरयान, पाँचवीं, चिरमाटेकरी, शाहपुर, मध्य प्रदेश

कीटन की रहस्यमयी बीमारी

तेजी ग्रोवर

चित्र: हबीब अली

यह बात है 17 अगस्त 1983 की। जम्मू से कुछ किलोमीटर दूर कश्मीर के पहाड़ों की तरफ चलते हैं। कलकलाती चनाब नदी के किनारे बसा अखनूर नाम का छोटा-सा पहाड़ी नगर है जहाँ मेरी बुआ का बेटा इकबाल सिंह दुर्गा उन दिनों भारतीय सेना में कैप्टन हुआ करता था।

मेरे अब्बू इकबाल का नामकरण होने से पहले उसे कीटन कहकर पुकारते थे। लिहाज़ा वह अभी तक हम सबके लिए बड़ी-बड़ी आँखों वाला 68 वर्षीय बेहद शरारती लड़का कीटन ही है। अब्बू को शायद हॉलीवुड का एक्टर बस्टर कीटन पसन्द था या फिर उन्हें बिल्ली के बच्चे अच्छे लगते थे। और कोई बड़ी बात नहीं एक मात्रा बढ़ाकर अँग्रेज़ी शब्द *किटन (kitten)* को उन्होंने कीटन बना दिया हो। लेकिन इस कहानी में बीच-बीच में कीटन को कैप्टन दुर्गा ही कहना पड़ेगा क्योंकि पूरा प्रसंग उसके कैप्टन होने के गिर्द घटित हो रहा है।

हमारे कीटन की उम्र उस वक्त तीस के करीब रही होगी। वह मेजर बनने ही वाला था और अपनी रेजिमेंट में बेहद लोकप्रिय व्यक्ति था। हर महफिल की जान कैप्टन दुर्गा जब तक पार्टी में हाज़िर ना हो जाता सब अफसर उसके लिए आँखें बिछाए बैठे रहते। उसकी खासियत यह भी थी कि उसे गालिब और अन्य मशहूर शायरों की गज़लें याद थीं और सही वक्त पर

उस वक्त तक कीटन के दिल की धड़कन भी तेज़ होने लगी थी और उसके चेहरे पर गिरगिट समान रंग आने-जाने लगे थे। पर क्योंकि उसे ज़्यादा नखरा करने की आदत नहीं थी, वह किसी तरह रात 11 बजे घर लौट बिस्तर पर लेट गया। लेकिन नींद बिलकुल गायब थी।

उनका कोई मौजूँ शेर उसे याद आ जाया करता था, जिससे कभी-कभी कठिन घड़ियाँ भी मुस्कराहट में बदल जातीं। (अपनी इस खासियत के लिए वह अपने मामू यानी मेरे अब्बू को पूरा श्रेय देता है। मैं कीटन से दो बरस छोटी थी और अब्बू का चहेता शिष्य वही था क्योंकि वह उच्चारण दोष के बिना अब्बू के याद करवाए गालिब और मीर के कलाम उन्हें सुना दिया करता था।)

बास्केटबॉल की राष्ट्रीय टीम में होने के कारण हमारी कहानी का कैप्टन व्यायाम भी खूब किया करता। इसलिए उसका शरीर छरहरा और सुगठित था। चुस्त, फुर्तीला, हँसोड़ और हरेक की मदद करने वाला कैप्टन दुर्गा अखनूर की छावनी में उन दिनों अपनी पत्नी सुषमा के साथ डेढ़ कमरे के एक बाशा (आधी ईंट-पत्थर और आधी घास-फूस और मिट्टी की बनी झोंपड़ी) में रहता था।

एक दिन लंच ब्रेक के दौरान घर लौटकर हमारी कहानी का नायक खाना खाकर रोज़ की तरह दस मिनट की झपकी लेने लेट गया। सुषमा जिस चादर पर उन दिनों गुलकारी कर रही थी, उसका सामान भी बिस्तर पर ही पड़ा था। झपकी के दौरान हमारे कैप्टन को दाहिने टखने के ज़रा ऊपर कुछ चुभन-सी महसूस हुई। सुषमा ने सुई को लापरवाही से बिस्तर पर छोड़ दिया होगा, यह सोचकर हमारा बन्दा चुपचाप पड़ा रहा। लेकिन ज़्यादा देर तक नहीं, क्योंकि उसे कुछ घबराहट महसूस होने लगी। फिर भी हिम्मत कर वह उठकर वापिस काम पर लौटने की तैयारी करने लगा।

शाम के वक्त कोई पार्टी थी जिसके बाद उसे अपने सीनियर अफसर के साथ कुछ काम भी करना था। पार्टी में भी उसे बेचैनी महसूस हो रही थी और सिर में बेहद भारीपन महसूस हो रहा था। तिस पर किसी जूनियर ने उससे कह दिया, “सर आपका चेहरा देखकर डर लग रहा है।” उस वक्त तक कीटन के दिल की धड़कन भी तेज़ होने लगी थी और उसके चेहरे पर गिरगिट समान रंग आने-जाने लगे थे। पर क्योंकि उसे ज़्यादा नखरा करने की आदत नहीं थी, वह किसी तरह रात 11 बजे

घर लौट बिस्तर पर लेट गया। लेकिन नींद बिलकुल गायब थी। सुषमा को कष्ट ना देने की गर्ज़ से चार बजे तक कीटन चुपचाप लेटा रहा। लेकिन जब घबराहट और सिर का भारीपन बढ़ता चला गया तो 4 बजे सुबह सुषमा को जगाकर उसने चाय माँगी। जब चाय आई तो एक भी घूँट उसके हलक से नीचे नहीं उतर पाया। कीटन का मुँह और चेहरा बुरी तरह सूज चुका था।

अखनूर के नन्हे-से अस्पताल में किसी डॉक्टर को कुछ समझ में नहीं आया। दोपहर के तीन बजे तक आते-आते (जब पिछले दिन की झपकी के बाद 24 घण्टे बीत चुके थे) डॉक्टरों ने कैप्टन दुर्गा से कुछ सवाल पूछे। उसने जवाब दिया कि हो सकता है आराम करते वक्त कोई कीड़ा काट गया हो। शायद उनके मन में आया होगा कि साँप भी हो सकता है। लेकिन मरीज़ के अनुसार इसकी कोई सम्भावना नहीं थी। सुई चुभते ही उसने अपने पाँव को झटका ज़रूर था, लेकिन टखने के ऊपर कोई निशान डॉक्टरों को नहीं दिखा। हालाँकि उसके बाशा के आँगन में पिछले ही दिन एक कोबरा को मस्त घूमते देखा गया था। शरीर को बारीकी से देखने के बाद भी सर्प-दंश का निशान नहीं मिला तो डॉक्टरों ने एलर्जी की दवा ड्रिप से चढ़ाना शुरू की। लेकिन हालत में कतई सुधार नहीं हो रहा था।

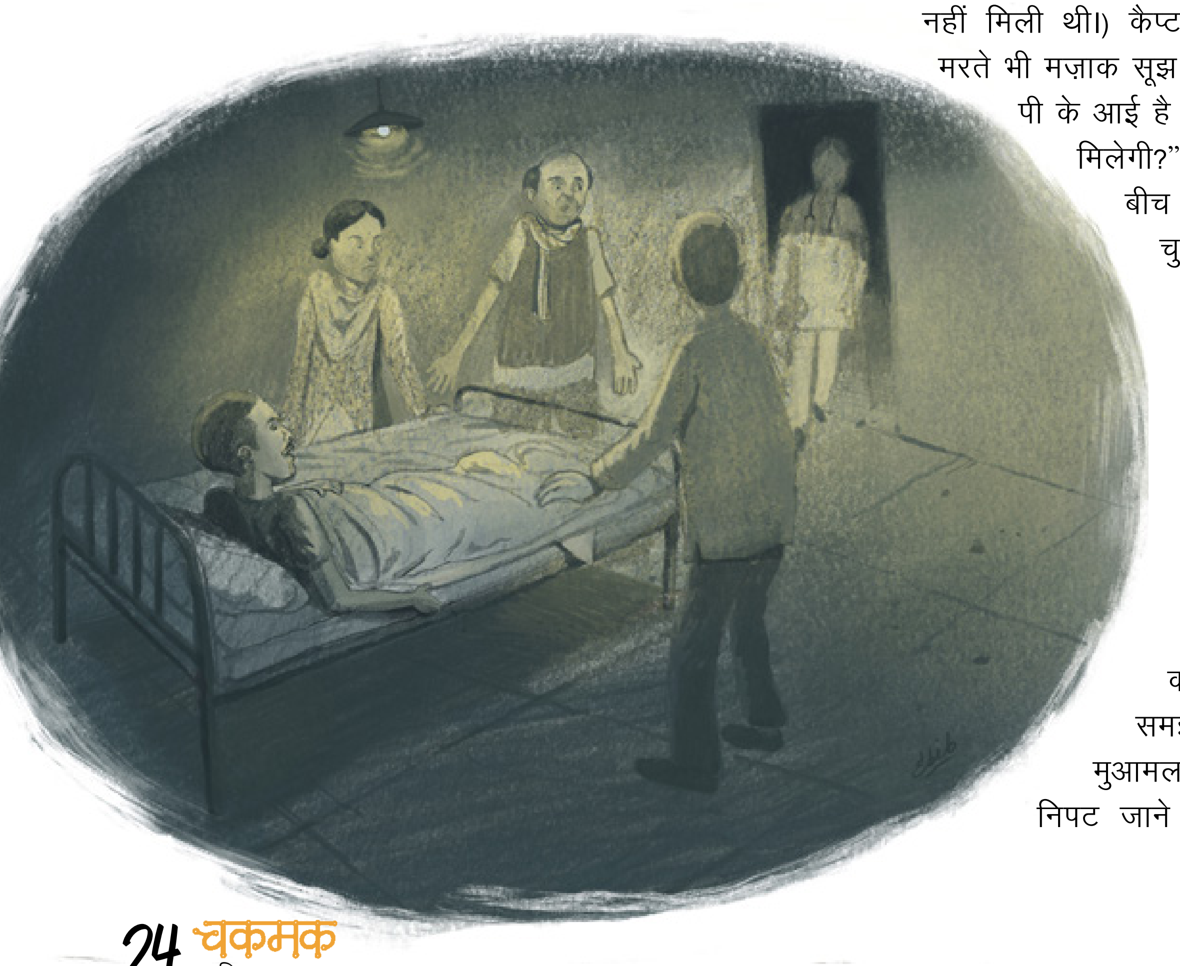

फैसला यह हुआ कि जम्मू के किसी बड़े अस्पताल में कैप्टन दुर्गा को ले जाया जाए। जम्मू पहुँचकर भी मर्ज़ का निदान नहीं हो पाया। शरीर की सूजन और दिल की धड़कन बढ़ती चली जा रही थी। रक्तचाप इतना कम कि जान का खतरा लगातार बना हुआ था। तभी किसी ने कहा, "लो नर्स पी के आ गई है, ड्रिप लगाएगी।" (इससे पहले जिस किसी ने भी ड्रिप लगाने की कोशिश की, उसे मरीज़ के निम्न रक्तचाप की वजह से ड्रिप लगाने लायक नस ही नहीं मिली थी।) कैप्टन साहब को मरते-मरते भी मज़ाक सूझ रहा था। "अगर नर्स पी के आई है तो उसे नस कहाँ से मिलेगी?" (पत्नी सुषमा इस बीच नर्स का नाम पढ़ चुकी थी: पी के अग्रवाल!)

मेजर (डॉ) दत्त बस एक ही दिन के लिए जम्मू आए थे और कैप्टन दुर्गा का केस सुन अस्पताल पहुँच गए थे। कैप्टन की हालत देखकर वो समझ गए थे कि मुआमला अब 15 मिनट में निपट जाने वाला है। साँस की

तकलीफ तो बहुत पहले से शुरू हो चुकी थी। शरीर की सूजन, निम्न रक्तचाप और हृदय की धड़कन सभी सामने खड़ी मौत को बुलावा दे चुके थे।

इस बीच किसी ने किन्हीं शर्मा जी को भी बुला लिया था जो डॉक्टर तो ना थे लेकिन जम्मू में उनकी धाक इतनी थी कि बड़े-बड़े डॉक्टर तक उनसे सलाह लेते थे। शर्मा जी ने मरीज़ के हालचाल जानकर खुद मुआयना किया तो तुरन्त बोले, "भैया, इन्हें तो कोबरा ने काटा है। आप लोग तो फौरन साँप वाली दवा ड्रिप से चढ़ा दो।" वहाँ खड़े स्टाफ ने मेजर (डॉ) दत्त की ओर देखा। वे चुपके-से बोले, "यूँ भी कैप्टन दुर्गा चन्द घड़ी के मेहमान हैं, क्यों ना यही करके देख लिया जाए?" हालाँकि यह सभी को पता था कि अगर शर्मा जी की बात सही ना निकली तो मरीज़ का काम साँप वाली दवा से भी तमाम हो जाता। उस कक्ष में जो लोग भी मौजूद थे उनमें से किसी ने नहीं सुना था कि कोबरा के दंश से कोई व्यक्ति 56 घण्टे बाद भी जीवित बच सकता है। इस बीच मेरी बुआ और फूफा चंडीगढ़ से कार में बैठ सीधे जम्मू के इस अस्पताल पहुँच चुके थे। फूफा की विनोदप्रियता भी बेटे से कम कहाँ थी। आते ही माहौल हल्का करते हुए वे बोले, "बेटा तुम्हारी जेब में एक सिगरेट है?"

दवा चढ़ने लगी तब भी ऐसा लग नहीं रहा था कि कोई सुधार हो रहा है। लेकिन शर्मा जी को यकीन था कि उनका फैसला सही है। उन्होंने मेरी बुआ से कहा, "आप देखिएगा आपका बेटा सुबह तक नाश्ता माँगेगा।" एक-एक करके दवा की नौ शीशी ड्रिप द्वारा विषाक्त हो चुके शरीर में उतरने लगी। अब चुनौती यह थी कि मरीज़ के होशो-हवास कायम कैसे रखने हैं। अगर वह होश खो देता या नींद में चला जाता तो उसका बचना मुश्किल था। सुषमा कीटन की पीठ से अपनी पीठ जोड़कर बैठी रही। बड़ी तेज़ रौशनी

का एक बल्ब कीटन के चेहरे के बिलकुल पास जला दिया गया। और कोई ना कोई उससे ऐसे सवाल पूछता रहा जिससे उसकी सतर्कता बनी रहे। लेकिन हर सवाल के जवाब में कीटन यही कहता रहा, "प्लीज़ मेरे दफ्तर की चाबी कर्नल दुआ को दे दीजिएगा।" पूरे उपचार के दौरान वह ठण्ड के मारे बुरी तरह काँपता रहा।

सुबह सात बजे कैप्टन दुर्गा यानी हमारे कीटन ने नाश्ते की माँग की। और इसके कुछ ही देर बाद बड़े प्यार-से सुषमा उसे दलिया खिला रही थी।

क्या 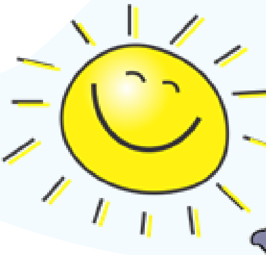 वास्तव में पूर्व में उगता है?

आलोक मांडवगणे,
वरुणी प्र, विजय रविकुमार*

चित्र: विजय रविकुमार

सितम्बर में काविया और उसका परिवार सिक्किम की राजधानी गैंगटॉक से तमिलनाडु के तूतकुडी शहर में शिफ्ट हो गया। काविया गैंगटॉक में रहने वाले अपने पुराने दोस्त दावा के साथ मैसेज के ज़रिए बतियाती रहती है।

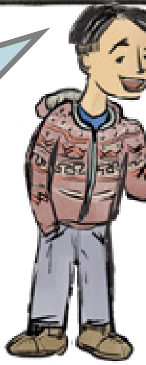

*आलोक मांडवगणे भोपाल के आर्यभट फाउण्डेशन और वरुणी प्र चैन्नई के गणितीय विज्ञान संस्थान में कार्यरत हैं। विजय रविकुमार चेन्नई में स्थित गणितज्ञ और कलाकार हैं।

सितम्बर से दिसम्बर तक गैंगटॉक में ऐसा लगा कि सूर्योदय दक्षिण की ओर खिसक रहा है। साथ ही दिन छोटे और रातें लम्बी होती जा रही हैं। तूतकुडी में?

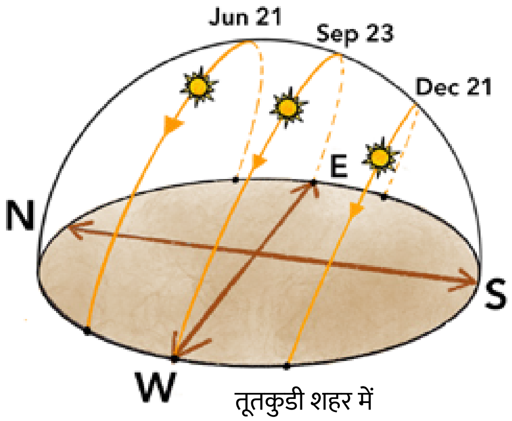

तूतकुडी शहर में

हाँ, यहाँ भी बिलकुल ऐसा ही हुआ — तूतकुडी में भी सितम्बर से दिसम्बर तक सूर्योदय हर हफ्ते थोड़ा और दक्षिण की तरफ दिखता गया!

21 जून से 21 दिसम्बर तक सूरज दक्षिण की ओर जाता दिखता है। इसे दक्षिणायन कहते हैं। और 21 दिसम्बर से 21 जून तक सूरज उत्तर की ओर जाता दिखता है। इसे उत्तरायण कहते हैं।

सूरज ठीक पूर्व में उगकर ठीक पश्चिम में अस्त सिर्फ विषुव (equinox) यानी कि 20 मार्च और 23 सितम्बर को होता है। अन्य किसी भी दिन सूर्योदय पूर्व से कुछ दक्षिण दिशा में होता है। इसी तरह सूर्यास्त की स्थिति भी पश्चिम से कुछ दक्षिण दिशा में होती है। और पूर्व से सूर्योदय की दूरी व पश्चिम से सूर्यास्त की दूरी बराबर होती है। ऐसा पृथ्वी के अक्ष के झुकाव और उसके सूरज की परिक्रमा करने के कारण होता है।

दिसम्बर अयनान्त (solstice) के दौरान दक्षिणी गोलार्द्ध सूर्य के सामने होता है। इसलिए सूर्योदय के समय सूरज की किरणें ठीक पूर्व से नहीं, बल्कि कुछ दक्षिण दिशा से आती हैं। और इसी तरह सूर्यास्त के समय किरणें ठीक पश्चिम से नहीं, बल्कि कुछ दक्षिण दिशा से आती है।

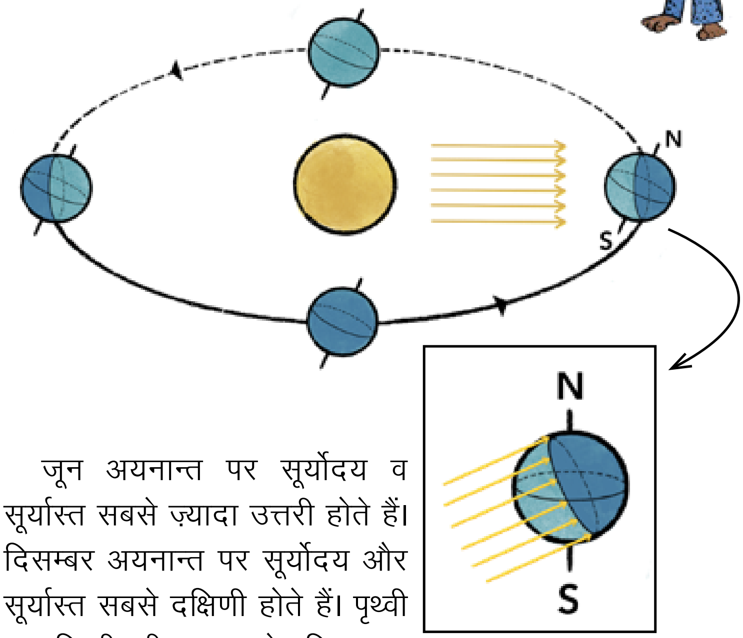

जून अयनान्त पर सूर्योदय व सूर्यास्त सबसे ज़्यादा उत्तरी होते हैं। दिसम्बर अयनान्त पर सूर्योदय और सूर्यास्त सबसे दक्षिणी होते हैं। पृथ्वी पर किसी भी जगह के लिए यह सच है।

तुम भी ये सब कर सकते हो! 21 दिसम्बर को सूर्योदय या सूर्यास्त होता है को ध्यान-से देखना: ये साल का सबसे दक्षिणी सूर्यास्त या सूर्योदय होगा।

दिसम्बर अयनान्त 21 दिसम्बर को है। मैं साल के सबसे दक्षिणी सूर्योदय को तूतकुडी से देखूँगी।

और मैं गैंगटॉक से। देखते हैं कि सूरज कितने दक्षिण से निकलता है!

दिसम्बर अयनान्त पर अधिक जानकारी व प्रयोगों के लिए तुम इस लिंक पर जा सकते हो:
https://astron-soc.in/outreach/activities/shadows-decem-solstice/

आज दलिए को क्या हो गया

उमेश, राम, सुरभि और रोहन,
अरण्यावास हॉस्टल, भोपाल

चित्र: शुभम लखेरा

तालाबन्दी के दौरान हमें बाज़ार से पर्याप्त मात्रा में सूजी, सेवइयाँ आदि मिलना मुश्किल हो रहा था। इसलिए दीदी गाँव से एक क्विंटल गेंहूँ ले आईं। हमने उसे फटका, बीना, नुकाया और दलिया पिसवाने भेज दिया। हम सभी को मूँग दाल और सब्ज़ियों से बना दलिया बहुत पसन्द है। इसलिए यह एक ठीकठाक ही विकल्प लग रहा था। पर आज कुछ अजब-सा हुआ हमारे यहाँ..........

हमारे हॉस्टल में सुबह का नाश्ता विकास बनाता है। वह बारह साल का है और बहुत बदमाशी करता है। इसलिए उसे ये जवाबदेही दी गई है। वो अंकुरित चीज़ों में प्याज़, मिर्च, टमाटर और मसाला मिलाता है और कटोरियों में परोसता है। फिर वह प्रेशर कुकर में दो सीटी लगाता है। चूँकि उसे क्लास के लिए तैयार होना पड़ता है। उससे अक्सर नाश्ते में देरी हो जाती है। इसलिए दीदी और उमेश उसकी मदद करते हैं।

उमेश ने कल रात ही कुकर में पानी डालकर रखा था। उसने उसमें दाल भी धोकर डाल रखी थी। विकास ने भी रात को ही हरी मिर्च और अदरक कतरकर फ्रिज में रख दिया था। उसे सिर्फ लौकी काटकर दलिया, नमक और हल्दी के साथ कुकर में डालना था। विकास को लौकी छीलने में देर होने लगी तो उमेश भैया खुद करने लगे और उसे नहाने भेज दिया। नाश्ता बनने में देर होने लगी तो अर्चना दीदी ने कुकर को चूल्हे पर चढ़ाया और नमक और हल्दी मिलाई। उमेश ने लौकी काटकर कुकर में दाल दी। फिर हमें लगा कि कुछ कैरियाँ डाल दें तो मज़ा आ जाएगा। हमने वो भी कतरकर कुकर में डाल दीं। तब तक विकास आ गया और उमेश नहाने चला गया। दीदी ने कहा, “विकास, आठ गिलास दलिया डालकर ढक्कन लगा दो।” फिर दीदी कम्प्यूटर के आगे बैठ गईं।

हमें लगा कि आज नाश्ता ठीक नौ बजे तैयार होगा। आठ बजकर चालीस मिनट पर कुकर की सीटी बजी। विकास तुरन्त चिल्लाया, “दीदी कितनी सीटी बजाना है?” उन्होंने “दो” कहा। वह झट दौड़कर चूल्हे के सामने खड़ा हो गया। दूसरी सीटी बजते ही वो स्टाइल में गैस बन्द किया और प्लेट जमाने लगा।

हम ठीक नौ बजे नाश्ते के लिए बैठे। अर्चना दीदी के आगे कुकर रखा था। उन्होंने कुकर खोला तो उनका चेहरा देखने लायक था। कुकर में ऊपर बस पानी था। दलिए को हिलाया गया तो कुछ ज़्यादा नीचे से ऊपर नहीं आया। वो बोलीं, “आश्चर्य है कि आज क्या हो गया। हमने कच्चे आम डाले थे, शायद खटास से दलिया और दाल ठीक से नहीं गले।”

फिर एक बड़ा भगोना और एक छन्नी लाई गई। हमने ऊपर से पानी का एक बड़ा भाग भगोने में डाल दिया। लेकिन दलिया अभी भी पानी से लबालब था। हमने प्लेटों को हटा दिया और कटोरे लेकर आए। दीदी कलछुल को कुकर के तले पे घसीटे हुए निकालतीं। उसे कटोरी में डालतीं। इसमें कुछ छोटे दाने और लौकी के टुकड़े होते। फिर वो दो कलछुल सूपनुमा पानी कटोरी में डालती। सब कोई यही जोड़ रहा था कि आज दलिया को क्या हो गया।

आप इस भ्रम में नहीं रहिए कि हमें नाश्ता बेकार लग रहा था। हमने तीन-तीन, चार-चार बार और दलिया लिया। इस नए स्टाइल के दलिए का स्वाद काफी अच्छा था। अधिक महत्वपूर्ण बात यह है कि हम नाश्ते के तुरन्त बाद पढ़ाई करते हैं। इसलिए हम बार-बार कटोरी भरवाते रहे और मज़े-से खाते रहे। अन्त में दीदी ने कह ही दिया, “काफी हो गया, अब कटोरे रखो और क्लास में जाओ।”

तभी उमेश खाने के लिए नीचे आया। वह रसोई में मदद करता है इसलिए देर से नहाता है। दीदी ने फिर उसके साथ चर्चा की। “हम रोज़ ऐसे ही बनाते हैं, पता नहीं आज क्या हो गया?”

उमेश ने अपना चम्मच कटोरे में हिलाया और कहा, “दीदी इसमें तो दलिया पड़ा ही नहीं है... बिना दलिया के ही दलिया बना डाला हमने।”

हम सभी को मूँग दाल और सब्जियों से बना दलिया बहुत पसन्द है। इसलिए यह एक ठीकठाक ही विकल्प लग रहा था। पर आज कुछ अजब-सा हुआ हमारे यहाँ...

यदि मैं तुमसे 1 से 100 तक की संख्याओं का योगफल पता करने को कहूँ तो तुम्हें इसमें कितना समय लगेगा? ऐसा मालूम होता है कि इसमें काफी समय लगेगा, नहीं?

पाँचवीं कक्षा में पढ़ने वाले कुछ बच्चों से यही सवाल पूछा गया था। शिक्षक को लगा था कि इस सवाल का जवाब पता करने में बच्चों को काफी समय लगेगा। लेकिन एक बच्चे ने तुरन्त ही कहा कि इसका जवाब है 5050। यदि तुम्हें उस बच्चे के जवाब पर यकीन ना हो तो उस बच्चे की विधि को तुम खुद ही जाँच लो।

गॉस की कहानी

आलोका कान्हेरे

गणित मज़ेदार

इन पन्नों में हम कोशिश करेंगे कि कुछ ऐसी चीज़ें दें जिनको हल करने में तुम्हें मज़ा आए। ये पन्ने खास उन लोगों के लिए हैं जिन्हें गणित से डर लगता है।

आओ देखते हैं कि उस बच्चे ने इतनी जल्दी जवाब कैसे खोज लिया। सवाल था:

1 + 2 + 3 + 4 + ...+ 97 + 98 + 99 + 100

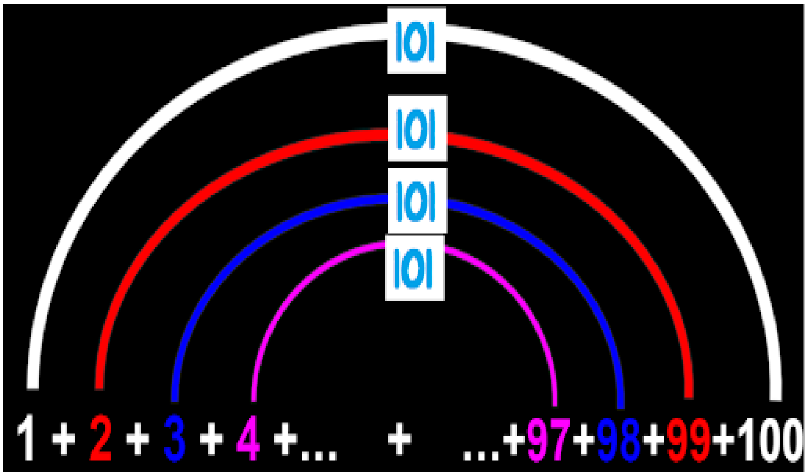

उसने ऐसी 50 जोड़ियाँ पता की जिनका योगफल **101** है। इसलिए जवाब हुआ **50 x 101 = 5050**।

उस बच्चे का नाम था गॉस। यह आज से कुछ चार सौ साल पहले की बात है। बाद में वह बच्चा एक महान गणितज्ञ बना।

अब, गॉस के इस विचार को छोटी संख्याओं पर आज़माते हैं और देखते हैं कि यह काम करता है या नहीं।

यदि हमें 1 से 10 तक की सभी संख्याओं का योगफल निकालना हो

1 + 2 + 3 + 4 + 5 + 6 + 7 + 8 + 9 + 10

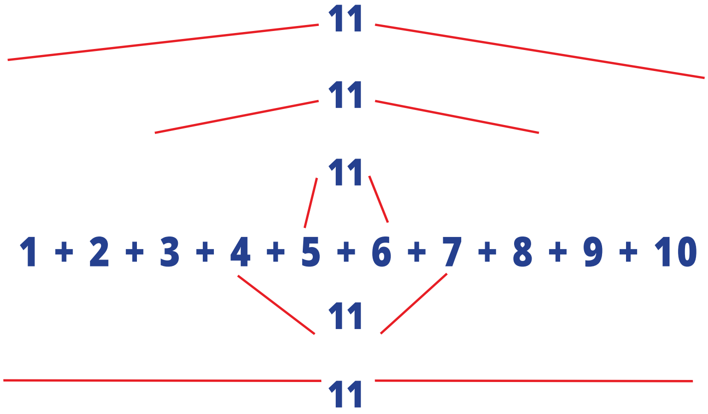

तो हमें 11 योगफल वाली 5 जोड़ियाँ मिलती हैं और कुल योगफल होता है 55।

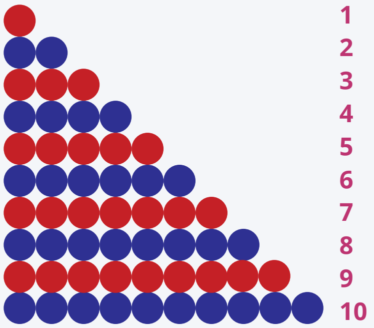

अब इसी सवाल को दूसरी तरह से देखते हैं

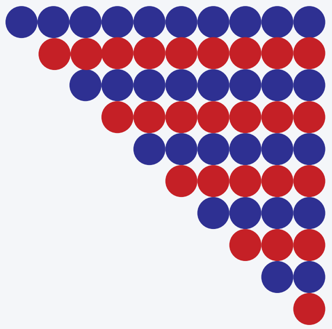

अब इसी चित्र की एक और कॉपी लेते हैं और उसे उल्टा करके देखते हैं

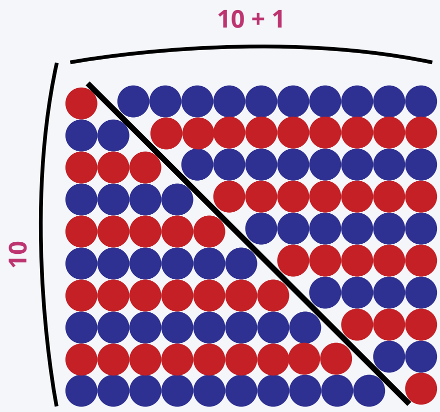

अब इन्हें एक साथ रखते हैं

हरेक पंक्ति में हमारे पास **10 + 1** यानी कि **11** मोती हैं। और ऐसी कितनी पंक्तियाँ हैं? चित्र **1** या **2** में समान पंक्तियाँ हैं यानी कि 10। तो मोतियों की संख्या हुई **10 x 11**। लेकिन हमने एक ही चित्र को दो बार इस्तेमाल किया है। तो चित्र **1** में कितने मोती हुए? **10 x 11** के आधे, नहीं?

क्या होगा यदि चित्र **1** की आखिरी पंक्ति में मोतियों की संख्या **101** हो तो? अपने जवाब हमें ज़रूर भेजना।

यदि तुम **101** मोतियों को कुछ इस तरह रखो तो जवाब क्या होगा?

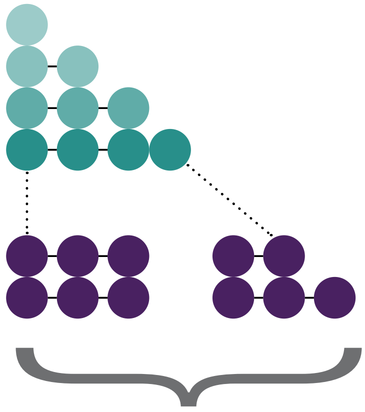

101 मोती

योगफल = 1+2+...+संख्या तक

चलो, हम सभी संख्याओं के लिए ऐसे सवालों को हल करने के दूसरे तरीके को आज़माते हैं।

कॉलम 1	कॉलम 2	कॉलम 3	कॉलम 4
क्रमांक	संख्या	अगली संख्या	योगफल
1	1	2	1
2	4	5	10
3	5	6	15
4	7	8	28
5	9	10	45
6	19	20	190
7	200	201	2010

क्या तुम्हें कॉलम 2, कॉलम 3 और कॉलम 4 में कोई सम्बन्ध दिखाई देता है?

संकेत: कॉलम 2 और कॉलम 3 को गुणा करो और फिर इनके बीच का सम्बन्ध देखो।

एक बार जब तुम यह पता कर लो तो पहले इसे छोटी संख्याओं के लिए आज़माओ और फिर बड़ी संख्याओं के लिए।

फल वाले रिंकू भैया

सीता, रोशनी, सम्मा, डागेश्वर, इमरान, पाँचवीं
प्रीति, हुलेश, ऋतू, मनीषा, आकांक्षा, जुगनू, कविता, छटवीं
शहीद स्कूल, बीरगाँव, छत्तीसगढ़

रिंकू भैया पाँच साल से यह काम करते आ रहे हैं। वो शास्त्री मार्केट रायपुर से फल खरीदकर लाते हैं और फलों को मौसम के हिसाब से बेचते हैं। जैसे बरसात के मौसम में सेब, केला, अनानास, अनार, नाशपाती, जामुन, चेरी। ठण्ड के मौसम में जाम, बेर, सीताफल, सन्तरा, सिंघाड़ा, आंवला, गन्ना, चीकू। गर्मी के मौसम में आम, खरबूज, अंगूर, कलिन्दर, पपीता।

रिंकू भैया सभी फलों को अपनी खरीदी रेट से 100 रुपए के हिसाब से 15-20 प्रतिशत बढ़ाकर बेचते हैं और अपनी पहचान वाले ग्राहकों को 200-300 रुपए तक के फल उधारी में देते हैं। वो जब शास्त्री मार्केट से फल खरीदने जाते हैं तो आधा पैसा नगद देते हैं और लगभग बीस-पच्चीस हज़ार तक की उधारी करते हैं। फिर हर हफ्ते के अन्त तक थोड़ा-थोड़ा करके अपनी उधारी चुकाते हैं।

वह बारह-चौदह घण्टे फल बेचने का काम करते हैं। वो एक दिन में दौ सौ से चार सौ रुपए कमा लेते हैं। उनके परिवार में कुल पाँच लोग हैं जिनमें से रिंकू भैया और उनके बड़े भाई फल बेचने का काम करते हैं। इससे ही इनके परिवार का गुज़ारा अच्छे-से चल जाता है।

बारिश के दिनों में फल जल्दी खराब हो जाते हैं। इस कारण फल बिकते नहीं हैं। पैसों का बहुत नुकसान होता है। कभी-कभी बीमार होने पर काम बन्द करना पड़ता है। रिंकू भैया बारहवीं क्लास तक पढ़ाई किए हैं। उन्हें यह काम करना पसन्द था। इस कारण उन्होंने आगे की पढ़ाई नहीं की और फल बेचने लगे। वो एक ही जगह पर ठेला लगाकर फल बेचते हैं।

बातचीत

हमारे रोज़मर्रा के जीवन के कुछ मददगार लोगों से

रोज़मर्रा के जीवन में हमारी अलग-अलग तरह से विविध लोग मदद करते हैं। हमने सोचा कि क्यों ना हम इनके बारे में थोड़ा और जान लें। सो इस अंक के लिए हमने बच्चों को ऐसे कुछ लोगों का इंटरव्यू करने के लिए कहा था। हमें भेजे गए इंटरव्यू में से कुछ तुम यहाँ पढ़ सकते हो।

जहाँ कमाई है वहीं घर है

सान्वी, छठवीं, सरदार पटेल विद्यालय, दिल्ली

चित्र: आईना, आठवीं, दीपालया लर्निंग सेंटर, दिल्ली

सान्वी: सीमा दीदी, आपकी बेटी गाँव में रहती है और आप शहर में। ऐसा क्यों?

सीमा दीदी: ऐसा इसलिए क्योंकि उसको कोई देखने वाला नहीं है। मैं भी काम पर जाती हूँ और मेरे पति भी।

सान्वी: आप हमारे घर काम क्यों करती हो?

सीमा दीदी: क्योंकि हमारा गुज़ारा नहीं हो पाता है, तो पैसे के लिए मैं यहाँ काम करती हूँ।

सान्वी: आपने कौन-सी क्लास तक पढ़ाई की है?

सीमा दीदी: दसवीं तक।

सान्वी: आगे पढ़ाई क्यों नहीं की?

सीमा दीदी: क्योंकि चाचा और पापा के बीच लड़ाई हो गई थी। तो दादा ने पापा को निकाल दिया था। फिर मैं अपनी नानी के पास रहने लगी। पर उनके पास इतने पैसे नहीं थे कि मैं पढ़ सकूँ।

सान्वी: अगर आप हमारे घर काम नहीं करतीं तो क्या करतीं?

सीमा दीदी: सिलाई करती।

सान्वी: आपका बचपन कैसा था?

सीमा दीदी: बचपन बहुत अच्छा था। मम्मी-पापा प्यार करते थे। जो माँगती थी, देते थे। पर जब मैं अपनी नानी के पास आई तो परेशान हो गई।

सान्वी: आपके बचपन का कोई ऐसा किस्सा जिसको याद करके आप बहुत खुश होती हो।

सीमा दीदी: जब मैं स्कूल में थी तो 15 अगस्त और 26 जनवरी पर मुझे गीत गाने के लिए अवार्ड मिला था।

सान्वी: क्या आपको गाँव में रहने का मन करता है?

सीमा दीदी: नहीं। जहाँ कमाई है वहीं घर है। पैसे के बिना गाँव में क्या करेंगे।

मैं काम करती हूँ।

दीपिका मैं विट्ठल मार्केट के पास एक बंगले पर जाती हूँ। मैं झाड़ू और बरतन माँजने का काम करती हूँ। मैं सुबह-शाम दोनों टाइम जाती हूँ। बरतन माँजने में कभी ज़्यादा समय लगता है तो कभी कम समय लगता है।

जब दादा-दादी के यहाँ मेहमान या उनके बेटा-बेटी आ जाते हैं तो मुझे बहुत सारे बरतन माँजने पड़ते हैं। तब मुझे बहुत टाइम लग जाता है। हर महीने के वह मुझे दो हज़ार रुपए दे देती हैं। कभी-कभी जब मुझे दवाई या कपड़े के लिए पैसे चाहिए होते हैं तो ज़रूरत पड़ने पर वह मुझे पैसों की मदद कर देते हैं। उसके घर में दो जन दादा-दादी हैं। पैसे की मदद मिलने पर मैं दो हज़ार में से कटवा लेती हूँ।

मुझे काम करते हुए दो महीना हो गया है। स्कूल बन्द है इसलिए मैं काम पर जाने लगी हूँ। मेरी मम्मी ने मुझे वहाँ लगवाया है। मेरी मम्मी भी बगल वाले बंगले पर काम करती हैं। वह भी खाना बनाने और कपड़े धोने का काम करती हैं। जब भी दादी खाना खाती हैं तो वह मुझे खाने का पूछते हैं तो मैं भी खा लेती हूँ लेकिन अपने मन से भूख लगने पर भी कभी नहीं माँगती हूँ।

उस घर में दोनों डोकरा-डोकरी हैं। काम होने पर मैं जल्दी से वापस आ जाती हूँ। मैं पैदल ही जाती हूँ। उनका घर मेरे घर से पास है। वह मुझे पुराने कपड़े भी देती हैं क्योंकि उनके बच्चे अब बड़े हो गए हैं। दूसरे काम के लिए उस घर में एक भैया और दीदी लोग आते हैं। एक भैया हैं जो दिन-रात उनकी सेवा करते हैं।

दीपिका
चौदह साल, श्याम नगर, मुस्कान संस्था
भोपाल, मध्य प्रदेश

चित्र: दीपना देवादुला, सात साल, राष्ट्रोत्थाना विद्या केन्द्र, बेंगलूरु, कर्नाटका

नानी का डिब्बा

पीहू झा
नौ साल, शिव नाडर स्कूल, नोएडा
उत्तर प्रदेश

मेरी नानी के पास एक बहुत बड़ा डिब्बा था जिसमें बहुत सारी चॉकलेट भरी थीं। एक दिन जब मैं वहाँ गई तो मैंने देखा कि कोई घर में था ही नहीं। तो मैंने सोचा कि मैं उस डिब्बे को खोलकर चॉकलेट ले लेती हूँ। क्योंकि डिब्बा बड़ा था तो पहली बार नानी को पता ही नहीं चला। दूसरी बार मैंने और चॉकलेट ली। डिब्बा बड़ा तो था लेकिन उसके ऊपर का हिस्सा बहुत छोटा था। इससे पहले कि मैं उसे पलटकर चॉकलेट निकालती, इस बार मेरा हाथ फँस गया। मैं ज़ोर-से रोई क्योंकि मैं डर गई थी और घर खाली था। लेकिन मैं अपनी नानी के ड्रेसिंग टेबल पर गई और एक क्रीम निकालकर अपने हाथ पर लगा ली। इससे डिब्बा हाथ से निकल गया। पर नीचे गिर गया और टूट गया। फिर मेरी नानी आ गईं। जब उन्होंने देखा कि डिब्बा टूट गया है और मेरे पूरे चेहरे पर चॉकलेट लगी है तो वो हँस पड़ीं।

चित्र: अद्विका धीमान वालिया, तीसरी, बाल विद्या निकेतन, दिल्ली

चित्र: अर्विन, दूसरी, दिल्ली पब्लिक स्कूल, सुन्दर नगर, मण्डी, हिमाचल प्रदेश

मुश्किल

वर्षा
चौदह साल
श्याम नगर, मुस्कान संस्था
भोपाल, मध्य प्रदेश

मेरा पन्ना

मैं अभी जिस बंगले में काम करने जा रही हूँ पहले मेरी मम्मी वहाँ जाती थीं। तब मैं छठवीं क्लास में पढ़ती थी। जब मेरी मम्मी खतम हो गईं उसके बाद से मैं उसी घर में जाने लगी। मैं वहाँ पर झाड़ू-पोछा का काम करती हूँ। जब जाना शुरू किया था तब मैं पन्द्रह साल की थी। स्कूल मैंने इसी कारण से छोड़ दिया। घर पर रहते हुए कभी लकड़ी गीली रहती या कभी लकड़ी नहीं मिलती थी तो खाना बनाने में मुश्किल होती थी। इसके कारण मैं खाना नहीं बना पाती थी तो मेरा भाई मुझे बहुत मारता था। लकड़ी लाना, राशन लाना यह सब मैं करने लगी। घर की ज़िम्मेदारी थी, इस कारण मैंने स्कूल की पढ़ाई भी बीच में छोड़ दी। मेरे भाई मुझे बहुत मारते थे। झगड़ा करते थे कि खाना नहीं बनाती है। जिस दिन खाना बनाकर रखती थी उस दिन वह नहीं खाते थे। लेकिन जिस दिन खाना नहीं बनता था तो बहुत बुरी तरह से मारते थे। अभी मैं ही अपने भाइयों का ध्यान रखती हूँ।

चाय

रामेश्वरी गाडेकर
छठवीं, प्रगत शिक्षण संस्थान
फलटण, सतारा, महाराष्ट्र

मेरी दादी एक बार चाय बना रही थीं। तभी उन्होंने देखा कि छोटे डिब्बे में शक्कर खतम हो गई है। तो उन्होंने बड़े डिब्बे में से शक्कर निकाली और चाय में डाली। चाय उबलने के बाद दादी ने देखा चाय का रंग अलग-सा आया है। फिर उन्होंने चाय चखकर देखी। चाय का स्वाद भी अलग लग रहा था। फिर उन्होंने शक्कर का डिब्बा देखा। डिब्बे मे शक्कर नहीं बल्कि बारीक किया हुआ चावल था। यह बात दादी ने हमें बताई तो हम बहुत हँसे।

चित्र: ज़ैना, पाँच साल, नई दिल्ली

1. चित्र में पार्क की गई कार कौन-से नम्बर की पार्किंग पर होगी?

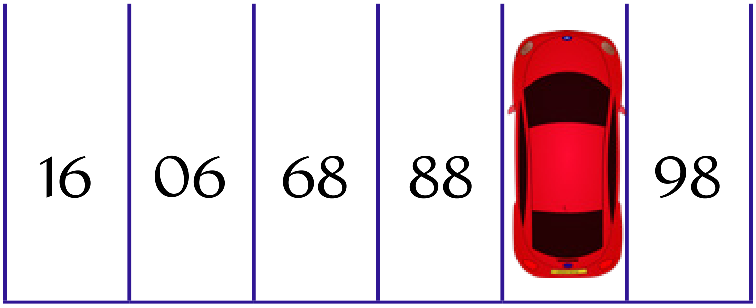

2. दी गई खाली जगहों में तुम दो अक्षरों का ऐसा शब्द लिखना है जिसे आगे वाले और पीछे वाले शब्दों में जोड़ने पर नया सार्थक शब्द बने। जैसे– कट (हल) वा

तर (..........) गर

प (..........) रानी

अ (..........)गी

कै (.........) ज़ान

सं (.......) र

3. नीचे दिए गए वाक्यों में कुछ जानवरों के नाम छिपे हुए हैं। ढूँढकर बताओ।

- मैंने कहा था प्रभा लू में बाहर मत जाना।
- धोखाधड़ी के मामले में वह कई दिनों तक जेल में बन्द रहा।
- स्कूल टाइम से ही रोहन और अदीब करीबी दोस्त हैं।
- निया बता रही थी कि सुनील गायक बनना चाहता है।
- जब नेहा आई तब सिया रसम बना रही थी।

4. स्कूल जाने के रास्ते में सारा ने अपने दाईं ओर कुल 25 पेड़ गिने। लौटते हुए उसने अपनी बाईं ओर 25 पेड़ गिने। बता सकते हो कि उसने कुल कितने पेड़ गिने?

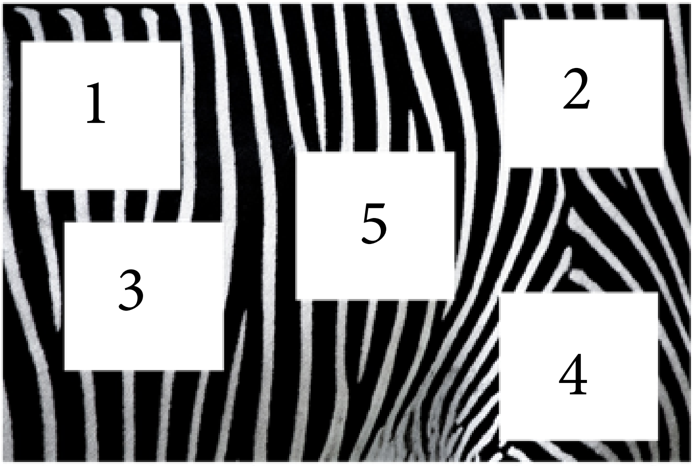

5. ज़रा बताओ तो कि खाली जगहों में कौन-से टुकड़े आएँगे?

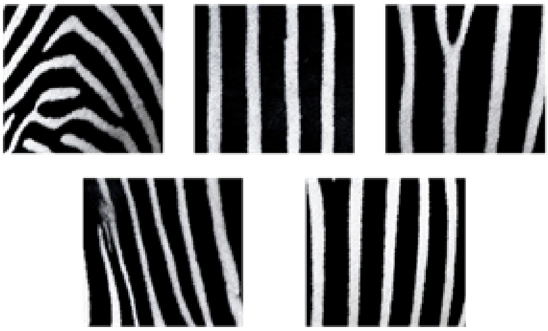

माथापच्ची

न किसी से झगड़ा, न किसी से लड़ाई
फिर भी बेचारी की रोज़ होती पिटाई

(ढोलक)

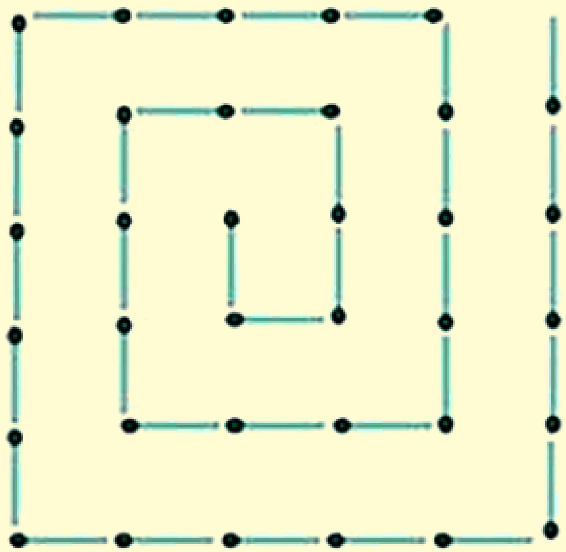

6. क्या तुम केवल चार तीलियों को इधर-उधर करके अलग-अलग माप के तीन चौकोर बना सकते हो?

7. दिए गए चित्र की हर पंक्ति व हर कॉलम में एक पांडा, एक तोता, एक बिल्ली और एक बन्दर होना चाहिए। इस शर्त के आधार पर खाली जगहों में कौन-से जानवर आने चाहिए?

बत्तीस पीपल के एक ही पत्ती।

(दाँत और जीभ)

ना तो पंख हैं ना ही तो पैर हैं
फिर भी चलती पानी में।
सबको उनकी मंज़िल पहुँचाती
ज़िक्र भी आता कहानी में।

(नाव)

एक किले के दो ही द्वार,
जिसके सैनिक लकड़ीदार
दीवार से टकरा गए
तो खतम उनका संसार

(माचिस)

रंग-बिरंगी देह हमारी
भरे पेट में फाहा
जाड़े की कठिन रातों में
सबने मुझको चाहा

(रज़ाई)

1
2
3
4
5
6
7
8
9
10
11
12
13
14
15
16
17

चित्र पहेली

बाएँ से दाएँ

ऊपर से नीचे

दिए हुए बॉक्स में 1 से 9 तक के अंक भरने हैं। आसान लग रहा है ना? पर ये अंक ऐसे ही नहीं भरने हैं। अंक भरते समय तुम्हें यह ध्यान रखना है कि 1 से 9 तक के अंक एक ही पंक्ति और स्तम्भ में दोहराए ना जाएँ। साथ ही साथ, गुलाबी लाइन से बने बॉक्स में तुमको नौ डब्बे दिख रहे होंगे। ध्यान रहे कि हर गुलाबी बॉक्स में भी 1 से 9 तक के अंक दुबारा ना आएँ। कठिन भी नहीं है, करके तो देखो। जवाब तुमको अगले अंक में मिल जाएगा।

सुडोकू 48

	3	5			2		9	7
1				4				
8	2		3	7	6		5	
2	7	6			4	1		5
	1	4	2	5		8		
5	9		6	1	3	7		
		1						6
				2			7	
7	5		4	6		9	1	3

माथापच्ची जवाब

1. 87 (चित्र को उलटा करके नम्बर देखो तो पता चल जाएगा)

2. तर (कारी) गर
प (रात) रानी
अ (कल)गी
कै (रम) ज़ान
सं (कट) र

3.
- मैंने कहा था प्रभा लू में बाहर मत जाना।
- धोखाधड़ी के मामले में वह कई दिनों तक जेल में बन्द रहा।
- स्कूल टाइम से ही रोहन और अदीब करीबी दोस्त हैं।
- निया बता रही थी कि सुनील गायक बनना चाहता है।
- जब नेहा आई तब सिया रसम बना रही थी।

6.

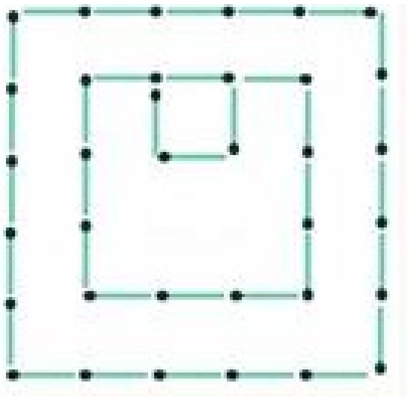

5.

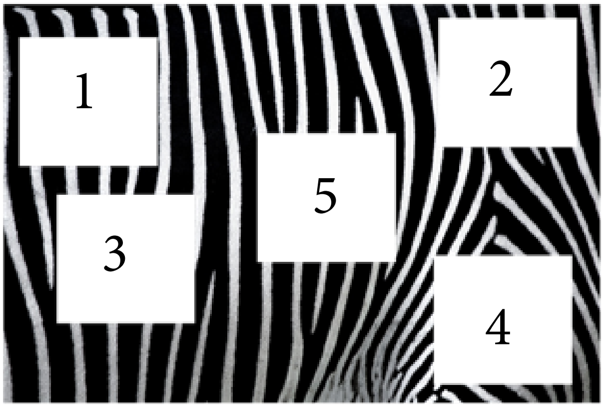

4. 25 ही पेड़ गिने क्योंकि जो पेड़ स्कूल जाते समय दाईं ओर थे, वही लौटते समय बाईं ओर थे।

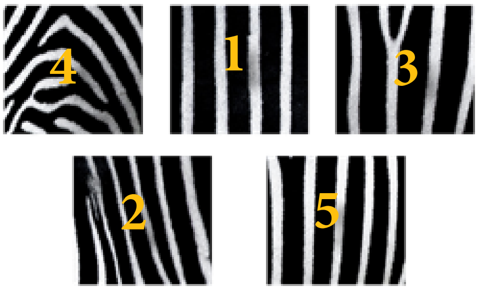

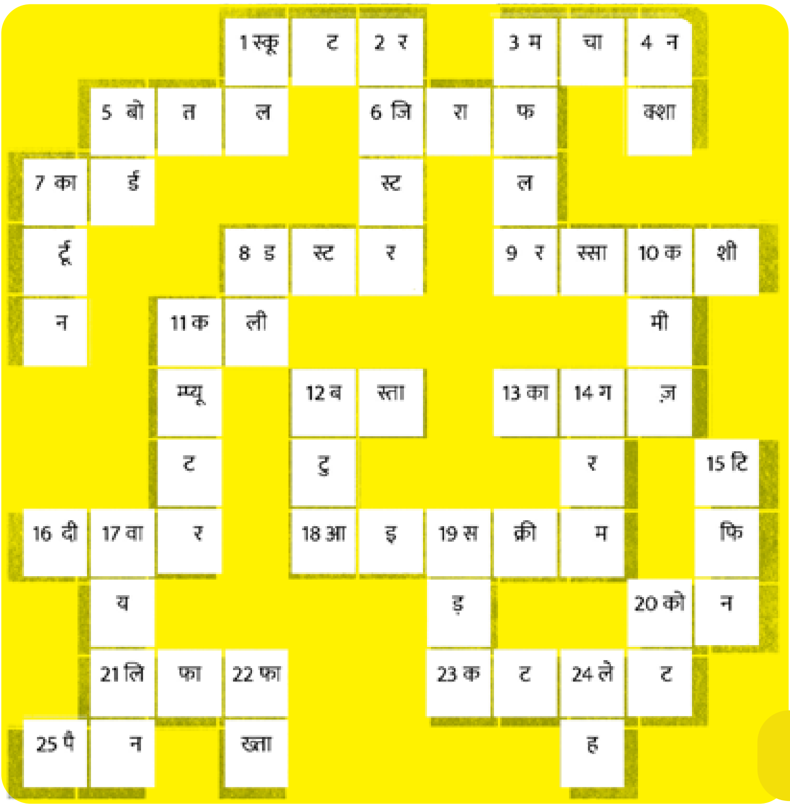

7.

नवम्बर की चित्रपहेली का जवाब

सबसे पहले
लाइफ इंश्योरेंस

क्योंकि बच्चों को
बड़ा होने में देर नहीं लगती!

पाइए आकर्षक भुगतान
बच्चे के विकास के महत्वपूर्ण पड़ावों पर.

मुख्य विशेषताएँ :

- **आयु संबंधी पात्रता :** 0–12 वर्ष. **परिपक्वता आयु :** 25 वर्ष
- **न्यूनतम बीमा राशि :** ₹ 1 लाख. **अधिकतम बीमा राशि :** कोई ऊपरी सीमा नहीं
- **मनी बैक किस्तें :** 18, 20 और 22 वर्ष की उम्र पूरी होने पर मूल बीमा राशि का 20%
- **परिपक्वता लाभ :** मूल बीमा राशि का शेष 40% और बोनस
- **प्रीमियम वेवर राइडर लाभ :** विकल्प उपलब्ध
- **पॉलिसी की अवधि के दौरान मनी बैक किस्तें विलंबित करने का विकल्प उपलब्ध**

अपने एजेंट/शाखा से संपर्क करें या
हमारी वेबसाइट www.licindia.in पर जाएँ या
SMS करें आपके शहर का नाम 56767474 पर

भ्रामक फोन कॉल्स तथा फर्जी / धोखाधड़ी वाले ऑफर्स से सावधान आईआरडीएआई सर्वसाधारण को सूचित करता है • आईआरडीएआई या इसके अधिकारी, बीमा विक्रय या वित्तीय उत्पाद अथवा प्रीमियम निवेश संबंधी गतिविधियों से संबंध नहीं रखते. • आईआरडीएआई किसी प्रकार के बोनस की घोषणा नहीं करता. ऐसे फोन आने पर कॉल विवरण तथा फोन नंबर की रिपोर्ट तुरंत पुलिस में दर्ज करवायें.

Follow us : You Tube LIC India Forever

IRDAI Regn No. : 512

LIC
भारतीय जीवन बीमा निगम
LIFE INSURANCE CORPORATION OF INDIA
मध्य क्षेत्र, भोपाल

LIC/AR/19-20/27/HIN

बिक्री समापन से पूर्व अधिक जानकारी या जोखिम घटकों, नियम और शर्तों के लिए बिक्री पुस्तिका को ध्यानपूर्वक पढ़ें.

ज़िन्दगी के साथ भी, ज़िन्दगी के बाद भी.

RNI क्र. 50309/85 डाक पंजीयन क्र. म. प्र./भोपाल/261/2021-23

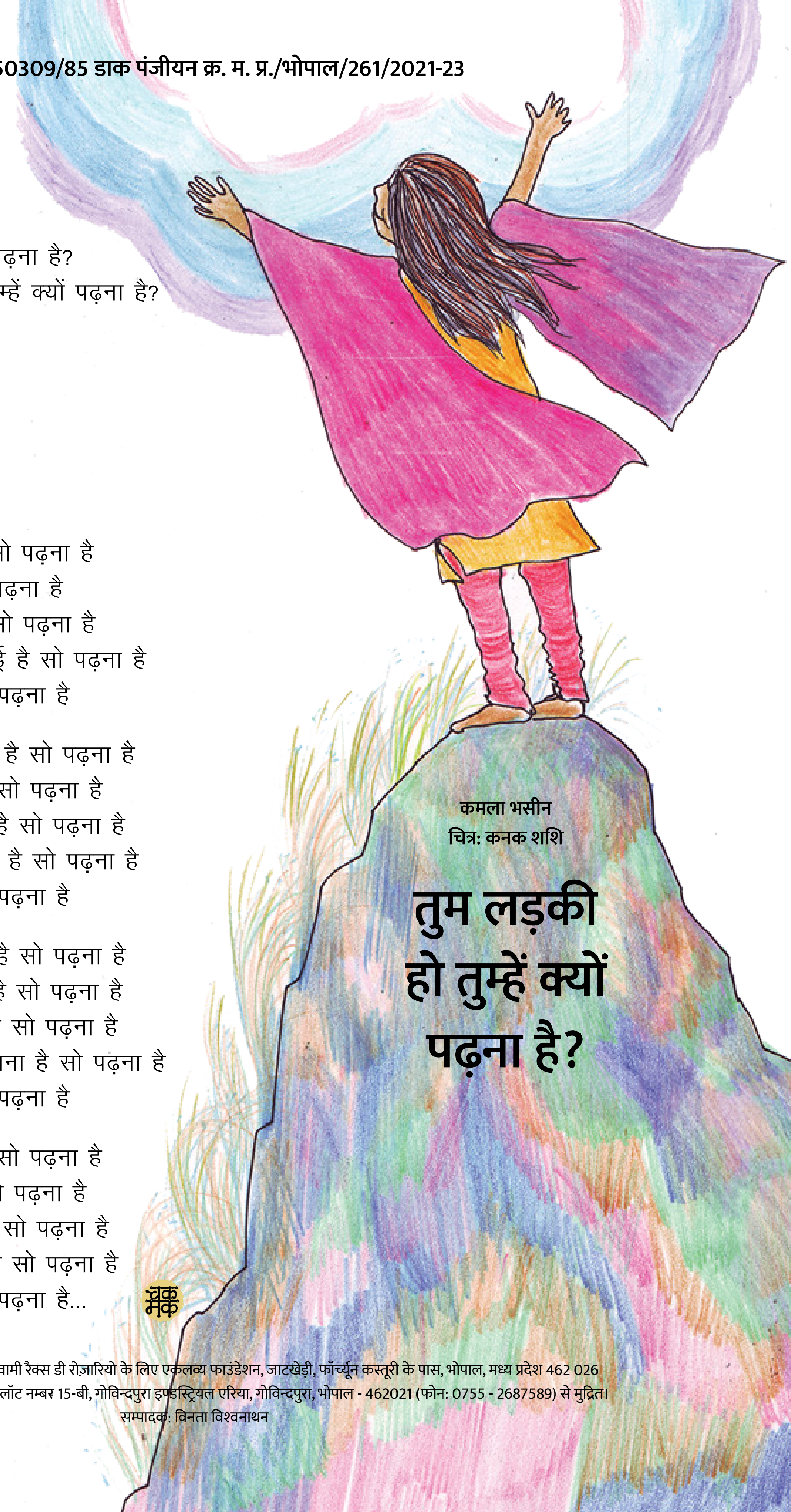

तुम लड़की हो तुम्हें क्यों पढ़ना है?

कमला भसीन

चित्र: कनक शशि

(बाप - बेटी से)

पढ़ना है! पढ़ना है! क्यों पढ़ना है?
पढ़ने को बेटे काफी हैं, तुम्हें क्यों पढ़ना है?

(बेटी - बाप से)

जब पूछा ही है तो सुनो
मुझे क्यों पढ़ना है
क्योंकि मैं लड़की हूँ
मुझे पढ़ना है

पढ़ने की मुझे मनाही है सो पढ़ना है
मुझमें भी तरुणाई है सो पढ़ना है
सपनों ने ली अँगड़ाई है सो पढ़ना है
कुछ करने की मन में आई है सो पढ़ना है
क्योंकि मैं लड़की हूँ मुझे पढ़ना है

मुझे दर-दर नहीं भटकना है सो पढ़ना है
मुझे अपने पाँव चलना है सो पढ़ना है
मुझे अपने डर से लड़ना है सो पढ़ना है
मुझे अपना आप ही गढ़ना है सो पढ़ना है
क्योंकि मैं लड़की हूँ मुझे पढ़ना है

कई ज़ोर-ज़ुल्म से बचना है सो पढ़ना है
कई कानूनों को परखना है सो पढ़ना है
मुझे नए धर्मों को रचना है सो पढ़ना है
मुझे सब कुछ ही तो बदलना है सो पढ़ना है
क्योंकि मैं लड़की हूँ मुझे पढ़ना है

हर ज्ञानी से बतियाना है सो पढ़ना है
मीरा का गाना गाना है सो पढ़ना है
मुझे अपना राग बनाना है सो पढ़ना है
अनपढ़ का नहीं ज़माना है सो पढ़ना है
क्योंकि मैं लड़की हूँ मुझे पढ़ना है...

प्रकाशक एवं मुद्रक राजेश खिंदरी द्वारा स्वामी रैक्स डी रोज़ारियो के लिए एकलव्य फाउंडेशन, जाटखेड़ी, फॉर्च्यून कस्तूरी के पास, भोपाल, मध्य प्रदेश 462 026 से प्रकाशित एवं आर के सिक्युप्रिन्ट प्रा लि प्लॉट नम्बर 15-बी, गोविन्दपुरा इण्डस्ट्रियल एरिया, गोविन्दपुरा, भोपाल - 462021 (फोन: 0755 - 2687589) से मुद्रित।
सम्पादक: विनता विश्वनाथन